ISSN (Print): 3048-6459

IEARJ

INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL

Peer Reviewed International Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Volume : 02 | Issue : 03 | March 2025

iearjc.com

Editor,
INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL
Indore - 452020. (Madhya Pradesh, India)
Email Id : info@iearjc.com | Website : iearjc.com | Contact No : +91-7974455742

INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEWED JOURNAL- EQUIVENT TO UGC JOURNAL

ISSN (Print) 3048-6459 & ISSN (Online) 2456-6713

Volume: 02 & Issue: 03

Month: March-2025

Starting Year of Publication: 2024

Frequency Year of Publication: Monthly

Format: Print Mode

Subject: Multidisciplinary

Language: Multiple Language (English & Hindi)

Published By:

International Educational applied Research Journal

Publisher's Address:

56, Sarthak vihar, Mirjapur, Indore-452020, and Madhya Pradesh

Printer:

International Educational applied Research Journal

Copyright:

International Educational applied Research Journal

Editor Board

Editor in Chief

Name	Designation	Affiliation/Address
Dr. Deependra Sharma	Associate Professor	GMERS Medical Collage, Valsad, Gujarat Email Id: info@iearjc.com Cont. No.8980038054

Emeritus Editor

Name	Designation	Affiliation/Address
Dr. Prasanna Purohit	Associate Professor	Department of Microbiology and Botany, Dr. A. P. J Abdul Kalam University Indore M.P Email Id: purohit_prasann@yahoo.com Conct. No.: 735401777

Executive Editor

Name	Designation	Affiliation/Address
Dr. Rina Sharma	Prof & HOD Obs and Gynae	Principal Autonomous state medical college, Amethi, U.P E-mail ID: principalgmcamethi@gmail.com
Dr. Manish Mishra	Associate Professor Biochemistry	Rajarshi Dasharath Autonomous State Medical College, Ayodhya, U.P Conct Number:9452005795,8887858880 Email Id: drmanishreena@gmail.com
Dr. Pawan Goyal	Professor and Head Department of Physiology	Kiran Medical College, Surat, Gujarat E-mail Id: pawan.goyal@kiranmedicalcpllege.com

Asst. Editor

Name	Designation	Affiliation/Address
Dr. Ashal Shah	Lecture	Department of Pharmacology, GMERS Medical college halarroad, nanakwada, valsad-396001 Gujarat E-Mail Id: aashal_167@yahoo.co.in Conct No. 7990955609
Dr. Boski Gupta	Lecturer	Department of Dentistry GMERS Medical college, Gandhinagar, Gujarat

Technical Editor (Language and Reference)

Name	Designation	Affiliation/Address
Mitasha Purohit	Technical Editor	Editor Office Indore M.P India
Vedant Sharma	Technical Editor	Editor Office Indore M.P India

National Editorial Board		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Amit Jain	Head R&D	Veer pharmachemJhagadia Bharuch Gujarat E-mail ID: amit.jain@veerpharmachem.com Conct. No. 7020692540
Dr. Jimi B. Hadvaid	Physician	Department of Homoeopathic (Enlisted) Physician, Ahmedabad-380001
Dr. Deepak Saxena	Director	IIPHG Ga dhinager Gujarat Email ID: director@iiphg.org & ddeepak72@iphg.org

International Editorial Board		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Dr. Sukhprit Purewal	Medical Laboratory Program Instructor	1300 Central Parkway West, Suite 400, Mississauge, ON L5C 4G8 CDAANA E-mail ID: s.purewal@oxfordeduca
Satya Dev Sharma	Director of Engineering	Address: Director of Engineering IVANTI Utah, USA. E-mail ID: Satyadev.sharma@ivanti.com
Dr. Prabhjot Singh	Advisor	Advisor, Health Surveillance, Disease Prevention and Control Pan American Health Organization/World Health Organization Office for Barbados, Eastern Caribbean Countries and the French Departments E-mail ID singhpra@paho.org

Publisher		
Name	**Designation**	**Affiliation/Address**
Mitasha Purohit	Technical Editor	Editor Office Indore M.P India
Editor Office Address		
56, SarthakVihar, Mirjapur, Indore M.P. PIN-452020		
Conct. No.		
+91-7974455742, 91-8980038054 | E-mail Id: info@iearjc.com		

INDEX

S.No.	PAPER TITLE AND AUTHOR NAME	PAGE No.
1.	विद्रोही संन्यासी उपन्यास की धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रासंगिकता	1-4
2.	भारतीय साहित्यकारों की सांस्कृतिक एवं पारिवारिक मानसिकता का महत्त्व	5-8
3.	**The Allegorical Study of William Golding's Lord of the Flies and Its Significance**	9-14
4.	**The Critical Study of Moral Vision and Modern Civilization Reflected in the Novels of William Golding**	15-20
5.	बुंदेली भाषा का इतिहास एवं उसकी साहित्यिक विकास यात्रा	21-26
6.	श्री महावीर प्रसाद का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रासंगिकता	27-34
7.	गढ़वाल की संस्कृति में जागर अथवा देव गाथाओं की सामाजिक प्रासंगिकता	35-40
8.	गढ़वाली गाथाओं का समाज पर प्रभाव	41-46
9.	A CRITICAL STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND PSYCHOLOGICAL APPROACHES	**47-64**
10.	**A STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND DEFENCE MECHANISM**	**64-73**
11.	"कन्या भ्रूण हत्या" समाजशास्त्रीय अध्ययन	**74-80**
12.	**ECOLOGICAL STUDY OF GLYCINE MAX (L) AT GAYA DISTRICT, BIHAR**	**81-87**
13.	**The Influence of Workplace Stress on Employee Engagement in Private Sector Organizations**	**88-104**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विद्रोही संन्यासी उपन्यास की धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रासंगिकता

[1]महाराज सिंह धाकड़

[1]पी-एच.डी. शोधार्थी,सहायक प्राध्यापक,हिन्दी विभाग,शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्योपुर (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15001711

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

हिन्दी उपन्यास विधा का यह दुर्भाग्य रहा है कि इस विधा के प्रति पूर्णतया समर्पित आलोचक हिन्दी में कम रहे हैं। हमारे मेघावी आलोचकों ने काव्य के सूक्ष्मतम और जटिल अनुभूति-संसार में जो चुनौतियाँ झेली हैं. बौद्धिक आनंद एवं रस प्राप्त किया है, सहृदयतापूर्वक परंतु अपेक्षित तटस्यता के साथ जो विश्लेषण क्षमता दिखायी है, उसे देखते हुए कहना पड़ता है कि हिन्दी का उपन्यास साहित्य उस सौभाग्य से वंचित ही रहा हैं। बार-बार यह प्रश्न उठाया गया है कि काव्य की तुलना में उपन्यास कम आधुनिक क्यों ? कम प्रयोगशील एवं कम महत्त्वाकांक्षी क्यों ? इसके उत्तर में यह कहा गया कि संवेदन की नवीनता, ताजगी और आवेग को क्षणमात्र में अभिव्यक्ति देकर उससे मुक्त होने की अथवा उससे उठने की जो राहत अथवा सार्थकता की अपरिसीम सुखद प्रेरणा काव्य के रचना- रत क्षणों के उपरांत मिलती है यह अपेक्षाकृत परंपराओं का वहन करने के लिए बाध्य अत्यधिक स्थिरवृत्ति की अपेक्षा करनेवाली अनुभूति के उत्तेजक क्षणों के आगे-पीछे संदर्भों का जाल स्ताते समय जीवट और कल्पना-शक्ति की बार-बार परीक्षा लेने वाली उपन्यास विधा की प्रसव पीड़ा में बहुत कम मिलती है।

मुख्यशब्द- पारसमणि, प्राणपण, शताजियों, पोंगापंथी, कालांतर

आदिशंकराचार्य की स्मृतियों पूरे मानव समाज के लिए मधुरता से भरी हुई है, जिसमें विविधता के साथ-साथ संघर्ष भी है। उनकी दूर दृष्टि अपवाद है, वे निरंतर श्रमशील एवं कार्यशील है और प्रत्येक क्षण का सपयोग करना जानते हैं। उन्होंने अपने ज्ञान के माध्यम से सनातन एवं संस्कृति को जीवन का प्रधान केन्द्र माना है। संस्कृत संस्कृति, धर्म और अध्यात्म जो कुछ भी श्रेष्ठ है। उसी से मानवता का निर्माण होता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

श्रीनगर से कामरूप कामाख्या और कलकत्ता से कोन्ति तक आदिशंकर के नाम की पारसमणि हमारा मार्ग प्रदीप्त करती गई। उस महान् यात्री के पदत्तिह्न खोजते हुए अनायास ही भारत भर की प्रदक्षिणा कब संपन्न हो गई पता नहीं चला।

हर सुधार कालांतर में स्वयं रूढि बन जाता है, हर क्रांति को पोंगापंथी बलते हुए और मुक्ति-योद्धाओं को तानाशाह बनते देखला इतिहास की आदत है। वे विद्रोही थे, उन्होंने मानव बलि समेत तत्समय के ढोंग, पाखंड, वामाचार का प्राणपण से विरोध किया। संन्यासी होते हुए उनमें यह कहने का साहस या कि मैं न मूर्ति हूँ, न पूजा हूँ, न पुजारी हूँ, न धर्म हूँ, न जाति हूँ।

आदिशंकराचार्य के पास आज के युवाओं के सभी प्रश्नों का उत्तर है, उनकी जिज्ञासाओं और कुंठाओं के भी। उनसे बड़ा प्रबंधन गुरु कौल होगा, जिसने शताब्दियों पहले केरल के गाँव से यात्रा प्रारंभ कर संपूर्ण राष्ट्र की चेतना और जीवन-पद्धति को बदल दिया।

जो संन्यासी संसार के सारे अनुशासनों से परे हुआ करते थे, उन्हें अखाड़ों और आश्रमों में संगठित कर अनुशासित और नियमबद्ध कर दिया। बौद्धों और हिंदुओं के संघर्ष को शांत कर दिया। शैवों, वैष्णवों, शाक्तों, गाणपत्यों, सभी को एक सूत्र में पिरो दिया।

उस अदभुत तेजस्वी बालक, चमत्कारी किशोर और सम्मोहक युवा शंकर की यह कथा आपको उनके विख्यात जीवन के अज्ञात प्रसंगों का दिग्दर्शन करा पाएगी।

आदिशंकराचार्य एक चत्मकारी बालक, दिग्विजयी धर्मयोद्धा, चुंबकीय व्यक्तित्व, भगवा संन्यासी, अयक यात्री, महाल संगठक, राष्ट्र निर्माता. विधि-निर्माता, अपूर्व वक्ता, अद्भुत कवि क्रांति दूत. युग प्रवर्तक एवं समाज सुधारक के रूप में आदिशंकराचार्य को जाला जाता है। आदिशंकराचार्य ने सनातन धर्म की प्रतीष्ठा तया भारत को आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधने के लिए पूर्व दिशा में गोवर्धन मठ, पश्चिम में शारदा मठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ तथा उत्तर में ज्योति मठ स्थातिप कि ये । उनके अपने जीवन में ऐसे बहुत से कार्य किये है, जो साहित्य और इतिहास के लिए उत्कृष्ट और अनुपम हैं। आदिशंकराचार्य ने श्रृंगेरी मठ की स्थापना की थी। उनका व्यक्तित्व में आकर्षण एवं चुंबकत्व था।

शंकर ने शांत चित्त से उत्तर दिया, हे महापंडित, ज्ञान की जय तो सदैव से निश्चित है, उसे आपके उलाहले के आश्रय की आवश्यकता नहीं है। जहाँ तक साकार और निराकार का विवाद है, यह आप सदृश पंडितों का बुद्धि-विलास है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है, इसलिए वह किसी आकार का बंधुआ नहीं है। जो आकार में ही सीमित है, वह ईश्वर नहीं हो सकता है, क्योंकि ईश्वर तो अपरिमित है। वह साकार भी है और निराकार भी। **(1)**

'आदिशंकराचार्य मण्डप में बैठे हुये है अपनी शांत मुद्रा में आदिशंकराचार्य ने अपनी योग्यता के द्वारा सत्य और असत्य का खण्डल किया है। उनमें अपार पांडित्य था, जिसके द्वारा निराकार और साकार ईश्वर को विभाजित किया। आदिशंकराचार्य ने अपने ज्ञान एवं विवेक के द्वारा ईश्वर को चुनौती दी यथार्थ, ब्रह्मा, विष्णु और महेश को अपने शास्त्रार्य के माध्यम से उनको मिय्या सावित किया है।

आधुनिक भारत के अधिकांश लोग उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से अपरिचित हैं, जो परिचित भी हैं, उनमें से अधिकांश के मस्तिष्क में उनकी छवि एक पारंपरिक धर्माचार्य जैसी है। किसी युग प्रवर्तक कर्मयोगी, क्रांतिकारी सुधारक और सर्वसमन्ययी राष्ट्र निर्माता की नहीं उनके अद्वितीय व्यक्तित्व को पूजा ज्यादा गया, किंतु समग्रा सबसे कम गया है।

वे हमारे इतिहास के सबसे गलत ढंग से समझे गए महापुरुषों में भी शिखर पर हैं। उनके जीते जी उन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहा गया, तब आज के अज्ञान पर आश्चर्य कैसे करें। क्या आपने कभी सोचा है कि हमारा आज का भारत उनके द्वारा स्थापित चार मठों के चतुर्भुज के भीतर ही बता है ? तो क्या उन्हें भावी विखंडल का सदियों पूर्व ही आभास या।

उस कुरूप और उदंड चांडाल ने शुद्ध संस्कृत में शंकर से पूछा, आप किसे हटने को कह रहे हैं ? आत्मा को या देह को ? आत्मा तो सर्वव्यापी निष्क्रिय और शुद्ध है। यदि देह को हटने को कह रहे हो तो देह तो जड़ है-वह कैसे हटेगी ? फिर मेरी देह और तुम्हारी देह में क्या भिन्नता है ? तत्त्वदृष्टि से ब्राह्मण और चांडाल में कोई भेद है? गंगाजल

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में प्रतिबिंबित सूर्य और सुरा में प्रतिबिंबित सूर्य में क्या अंतर है? अरे तुम्हारा कैसा ब्रह्मज्ञाल है। ? मालवों में भी छुआछूत का वित्तार कौन से वेद में है महाराज ? आत्मा और परमात्मा जब एक है तो आत्माओं में भेदभाव कैसे। **(2)**

आदिशंकराचार्य ने जातिवाद को समाप्त करने का प्रयास किया। चांडाल और शंकर का जो संवाद हुआ उसमें जीवन का यथार्थ और रस है। मनुष्य की दया और आत्मा एक दूसरे के पूरक है। मनुष्य को ब्रह्म ज्ञान आत्मा ने माध्यम से मिलता है। आदिशंकराचार्य ने तत्वदृष्टि के महान ज्ञाता थे। चांडाल ने अपने बौद्धिक अज्ञाल के माध्यम से उन्होंने आदिशंकराचार्य को सोचने लिए मजबूर कर दिया। श्रेष्ठ कौन है चांडाल या ब्राह्मण। उन्होंने अपने ब्रह्म ज्ञान के माध्यम से भ्रमों, आडंबरों, मतभेदों का खण्डल कर सनातन संस्कृति को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया।

शंकर का जीवन कई सारे विरोधाभासों का समुत्तय प्रतीत होता है। वह दार्शनिक और कवि, विद्वान् और संत रहस्यवादी और धार्मिक सुधारवादी, सबकुछ थे। यदि हम उनके व्यक्तित्व को याद करने का प्रयास करेंगे तो इनके इतने गुण उभरते हैं, जो पृथक् पृथक् छवि प्रस्तुत करते हैं। कोई एक उन्हें युवावस्था में बौद्धिक महत्त्वाकांक्षा में दीप्त एक निर्भीक और दृढ तार्किक के रूप में देखता है. कोई दूसरा उन्हें चतुर राजनीति के महाप्राज्ञ के रूप में स्वीकार करता है, जिन्होंने लोगों में एकता का मंत्र फूंकने का प्रयास किया, तीसरे की दृष्टि में वह शांत दार्शनिक हैं, जो निरुपम बोधकता के साथ जीवन और विचारों की विसंगतियों को एकलिष्ठ होकर समझाने का प्रयास कर रहे हैं, और चौथे के लिए यह ऐसे रहस्यवादी हैं, जो अब तक ज्ञात लोगों में सबसे बड़े हैं। उनके समान सार्वभौम मस्तिष्क वाले कम हुए हैं। **(3)**

मठ के परिसर में ही अनेक देवी-देवताओं के मंदिरों का निर्माण और मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा नियमित रूप से चलती रहती है। परिसर का नित्य विस्तार होता जाता है। महाविष्णु भुवनेश्वरी राम ब्रह्मा, हनुमान, गरुड. शालिग्राम, चंद्रमौलीश्वर, रत्नगर्भ गणपति आदि असंख्य देवी-देवता यहाँ विराजमान होते चले जा रहे हैं। आचार्य शंकर की सर्व समन्वयकारी दृष्टि सबको एक सूत्र में आवद्ध कर रही है।

टुकड़ों में विभाजित समाज के एकीकरण का अनूठा प्रयास अब सफल होता दिखाई दे रहा है। उनके मठ में श्री शारदांबा प्रधान हैं, किंतु स्थानीय ग्राम देवता से लेकर स्थानीय ऋषि-मुनि और उनके आराध्य देवी-देवताओं सबका सम्मान सबकी प्रतिष्ठा का ध्यान रखा गया है। **(4)**

विद्रोही सन्यासी में उपन्यासकार ने आदिशंकराचार्य की वैभवपूर्ण स्थिति एवं मनोदशा को व्यक्त किया है। आदिशंकराचार्य समन्वयवादी हैं दृष्टिकोण रखते है। उन्होंने सनातनधर्म की जीवन्त परम्परा को अधिक से अधिक व्यावहारिक सकारात्मक प्रभाव बनाने का प्रयास किया, जिससे आमजल के ऊपर सनातनधर्म का प्रभाव पड़े सलातलधर्म के द्वारा मनुष्य में दया, करुणा एवं मानवता के बीजों को रोपित किया जाता है।

महानुभावो, वेदांत की महिमा अलौकिक है, इसलिए इसका प्रचार मेरे जीवन का लक्ष्य है। वेदांत संसार के संताप को दूर करने के लिए चंद्रमा के समान शीतल है, किंतु पं. मंडल मिश्र ने कर्म मार्ग का आश्रय लेकर वेदांत की अवहेलना की है, इसलिए हे प्रिय मंडल, आप भी इस उत्तम मार्ग को स्वीकार कर लें अथवा मेरे साथ शास्त्वार्थ करें।

आत्मविश्वास से भरे हुए मंडल मिश्र भी ओजपूर्वक अपने स्थान पर खड़े हुए और बोले, यदि हजार मुखवाला शेषलाग भी मेरे सामने प्रतिवादी बनकर आए, तो भी में श्रुतिसम्मत कर्मकांड को छोड़कर आपके काल्पनिक दर्शन को कभी स्वीकार नहीं करूँगा। आपके मत का खंडन करने के लिए में शास्त्रार्य के लिए प्रस्तुत हूँ।

आदिशंकराचार्य की विचारधारा में शास्त्रार्थ करने की क्षमता थी। उन्होंने अपने शास्त्रार्थ के माध्यम से मनुष्य को एक निश्चित दिशा दी, जिससे मानव जीवन दूसरों के कल्याण के लिए बले। आदिशंकराचार्य एक मीमांसक, दार्शनिक, वित्तारक, शास्त्रकार, चिंतक एवं समाज के मूल्यांकनकर्ता ये। उन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा नये विचारों को स्थापित किया, जिससे मालवीय बुराईयों एवं अवगुणों का खण्डल किया जा सके। उन्होंने पूरी मालव जाति के कल्याण के लिए नयी विचारधाराऐं एवं अवधारणाओं को स्थापित किया, जिससे जीवन जीने के नये सिद्धान्त समार्थ्यवान बनें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 121.
2. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022. पृ. 64.
3. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 8.
4. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022. पृ. 129.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय साहित्यकारों की सांस्कृतिक एवं पारिवारिक मानसिकता का महत्त्व

[1]महाराज सिंह धाकड़

[1]पी-एच.डी. शोधार्थी,सहायक प्राध्यापक,हिन्दी विभाग,शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्योपुर (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15001734

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

भारतीय उपन्यासों को या अन्य साहित्य विधाओं को (हिन्दी और मराठी में अनुवादित) पढ़ते समय लेखकों की विशिष्ट मानसिकता का जो सामान्य रूप प्रतीत होता है, उसकी कुछ विशेषताओं को परिभाषित किया जा सकता है। इससे अनुभव विश्व के स्वरूप का कुछ बोध हो सकता है।

भारतीय लेखक आज भी व्यक्ति के रूप में कम परिवार के सदस्य के रूप में ही लेखन करता है। इधर 50-60 वर्षों में हमारी सुरियर, बंधनों से बोझिल वर्जनाओं से लियंत्रित परिवार व्यवस्था पर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से तथा नगरों में औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप आघात होते जा रहे हैं। ये आघात जितले बौद्धिक हैं, उतने मानसिक नहीं है। आज हमारी परिवार व्यवस्था ने संयुक्त रूप के स्थान पर विभाजित रूप अवश्य ग्रहण किया है परंतु वह विघटित नहीं हुआ है।

हमारे लेखन का अधिकांश अनुभव- विश्व परिवार की नींव विवाह संस्था पर होने वाले आघात. परिवार में बदलते संबंध, परिवार में पिसता व्यक्तित्व, आर्थिक कठिनाइयों में दबे सदस्य का दुःख इत्यादि बातों के इर्द-गिर्द तर काटता है। भारतीय संस्कृति में परिवार का स्थान इतला दृढ है कि व्यक्ति सर्वप्रथम पारिवारिक वास्तविकता से ही परिचित होता है। जाति, वर्ण, धर्म, समाज, राष्ट्र-ये संस्याएं बाद में व्यक्ति के ययार्य विषयक ज्ञाल में प्रविष्ट होती हैं।

मुख्यशब्द- वर्जनाओं, विघटित सर्वप्रथम इर्द-गिर्द, बोझिल ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

फ्रायड के कहने में मनुष्य की अधिकांश मानसिकता बत्तपल के चार-पांच वर्षों के संस्कारों पर निर्भर रहती है. अतिशयोक्ति जरूर है परंतु उसमें निहित इस सत्यांश को इन्कार नहीं किया जा सकता कि बचपन का मनुष्य के जीवन में अपरिसीम महत्त्व होता है। यह वास्तविकता है कि भारतीय पारिवारिक जीवन में बच्चों को लाइ प्यार, सुरक्षा की आश्वस्ति. स्थिरता मिलती है-गरीबी के बावजूद, सेवा, त्याग और समझौते के पाठ भी इसी व्यवस्था में मिलते हैं।

समझौते और समन्वय के संस्कार हजारों प्रकार से परिवार में पढ़ाये जाते हैं और परिणामतः मानसिक दृष्टि से विकृत, एकांतिक 'व्यक्ति' कम पाये जाते हैं। हमारे बच्चे बचपन से जीवन को सम्मिलित रूप में भोगते हैं, परिवेश की मार को वैयनिक रूप में नहीं, परिवार के सदस्य के रूप में खेलते हैं. सेवा लेते हैं तो त्याग करना भी जानते हैं. परिणामतः बचपन में अकेलेपन और असुरक्षा की चोट से विचलित कम होते हैं जिसका प्रभाव समस्त जीवन विषयक दृष्टि कोण पर पड़ता है। भारतीय मल प्रायः बहिर्मुखी, स्थिर और नार्मल रहता है।

हमारे परिवारों का अपेक्षाकृत रिवर होला कृषि व्यवस्था के कारण भी है और आज भी नगरों में रहने वाला बहुत बड़ा हिस्सा अपना बचपन गांवों में बिताकर तरुणाई में नगर की ओर आये हुए लोगों का है। अर्थात्, भारतीय लेख्नक पूर्णतः कृषि व्यवस्था से कटा हुआ नहीं है **(1)**

कृषि व्यवस्था में जीवल की मंथर गति ने मल को बहुत वित्तलित नहीं किया है। अधिकांश नगर में रहने वाले लेखक नगर-जीवन की यांत्रिकता, व्यस्तता और मालवीय भावना से रहित संबंधों से खीझते हैं. घृणा करते हैं. कटु रूप में प्रतिकृत होते हैं। वे 'इंटेंसिटी' की अपेक्षा नंबर गति और शांति ही पसंद करते हैं। हमारी आंतरिकता को युद्ध जैसी विस्फोटक वास्तविकता ने गटन स्तर तक अभी तक कभी झकझोरा भी नहीं है।

उपन्यास आधुलिक महाकाव्य है। जिस प्रकार महाकाव्य अनेक सर्गों में विभाजित रहता है, उसी प्रकार उपन्यास भी अलेक अध्याय, अनुच्छेद अथवा खण्डों में विभाजित रहता है। **(2)**

यही कारण है कि युद्ध विषयक साहित्य हम मनोरंजन के रूप में ग्रहण करना चाहते हैं, उससे भयानक रूप से दहल नहीं जाते। आधे मिनट के भूकम्प की वास्तविकता, हमें ग्रकशोर देती है, तब जिन्हें युद्ध ने सतत् मरण भय के कगार पर वर्षों तक खड़ा किया, उनकी मनःस्थिति की हमारे लिए कल्पना भी कठिन है। गौतम बुद्ध ने सर्व क्षणिक के सत्य का साक्षात्कार किया परंतु उनके अनुयायियों के लिए वह अनुभूति अधिकतर बौद्धिक अथवा तार्किक ही थी, वैसी तीव्र निश्चय ही नहीं थी जो संघातक हवाई जहाजों की छाया में रहनेवालों को सहनी पड़ती है। जीवन के प्रत्यक्ष दुःख से सामला न करके उससे भक्तिवाद, मायावाद और नियतिवाद के रूप में छुट्टी पाने का अभ्यास भी भारतीय मन को वर्षों से हुआ है।

शक्तिशाली आक्रामकों का सामना करने की अपेक्षा कछुआ धर्म को अपनाना और कम शक्तिशाली लोगों को अपनी सेवा में लगाकर दया और सहानुभूति के विशद् भावों के लिए अपने को ही धन्य समझना हमारा ऐतिहासिक कार्य रहा है। इन सब बातों ने हमारे मन को गति तीव्रता, संघर्ष, अजस्र दुर्धर्षता और हर क्षण अपने को खतरे में झोंक कर अपने प्राप्त को पाने की आकांक्षा से प्रायः विरत ही किया। इससे कुछ लाभ भी हुए हैं, और इससे कुछ नुकसान भी हुआ है जिसे 'वैश्विक सत्य के प्रति गहन उद्विग्नता' कहा जाता है, उसका निर्माण हमारे साहित्यकारों में प्रायः नहीं होता।

हमारे धार्मिक संगठन ने हमारी मानसिकता को विक्षोभ और घृणा के सांघातिक शोरों पर खड़े होने से बताया। जन्म-पुलर्जन्म की अवधारणाएं पाप पुण्य की कल्पालाएं प्रायश्चित्त के विविध मार्ग, वर्ण जाति का अभिमान इत्यादि बातों के कारण यथास्थिति के प्रति एक संतोषजनक रुख अपनाने की सुविधा हमें मिली।

विभिन्न पूजा-प्रणालियों, उपासना के विविध मार्गो, विभिन्न किस्म के त्यौहारों और कर्मकाण्डों ने हमारी वैयनिक भावनाओं को नियंत्रित कर उन्हें उदात्त बनाकर या स्वस्थ निकास देकर विस्फोटक होने से बताया, अतुप्तियों के दमन को सह्य बना दिया, परिणामतः वासला के तीव्र आघातों से, पाप-बोध से और अपराध की भावना की पीड़ा से हमें बताया। जहां तक सामाजिक स्वास्थ्य एवं शांति का संबंध है, वह हमें मिली परंतु हमारा साहित्य इन स्थितियों से प्रायः वंचित रहा। ग्रीक साहित्य में जो ट्रेजिक जीवन का बोध है, जिसका प्रभाव पाश्चात्य साहित्य पर प्रनुर रूप में पड़ा, वह भारतीय साहित्य में नहीं दिखता। **(3)**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हमारे साहित्य में अशुभ की समस्या को विशेष उत्कट रूप में, तर्क और भावना की समस्त शक्तियों को एकाग्र कर चित्रित नहीं किया गया। हमारे अनुभवों पर 'इविल' की शैताली, टिस, भयावह छाया प्रायः नहीं पड़ी । जहां पड़ी, वहां 'इविल' को स्वतंत्र सत्ता के रूप में नहीं देखा गया। शाप ईश्वरीय लीला, पूर्वजन्म का पाप नियति ऐसे शब्द ये जिन्होंने 'इविल' के रूपों पर अधिक गहराई से सोचने ही नहीं दिया।

भारतीय उपन्यास की अवधारणा एवं स्वरूप को लेकर दो-तीन दशक से विमर्श हो रहा है। इस विमर्श की सकारात्मक परिणति यह हुई कि अब न तो परम्परा के प्रति वैसी मुग्धता दिखाई देती है, न उन टकराहटों, घटनाओं की अवहेलना उपेक्षा की जाती है जिन्होंने भारतीय समाज को प्रभावित किया था। **(4)**

मानवीय स्वभाव में लिहित अशुभ को हमारी चेतना ने स्वीकार नहीं किया क्योंकि मल को अपने मूल रूप में सत्य गुण युक्त हमले माला । रज और तम के विकारों को एकाग्र बनाकर शायद हमले नहीं देखा। हमारे आधुनिक साहित्य में धार्मिकता के मूल्यों के ख़त्म होने की गहरी पीड़ा भी व्यक्त नहीं हुई। साहित्य रचना ईश्वर का अनुपम उपहार है जिसे हर कोई प्राप्त नहीं कर सकता। जिस किसी को यह वरदान प्राप्त हो वह अपनी लगल, कल्पना शक्ति, अथक परिश्रम, तीव्र व तेज दृष्टि अनुभव आदि से अपनी साहित्य साधना को प्राप्त कर सकता है। **(5)**

धर्म को अत्यधिक महत्व देने वाले समाज की यह स्थितियां तो मन का छिछलापन व्यक्त करती है या इस तथ्य का द्योतक है कि धर्म हमारे लिए जितना सामाजिक आत्तरण का माल बना था, उतना आध्यात्मिक व्याकुलता का विषय नहीं। क्या हमारा धर्म और हमारी आध्यात्मिकता, दो अलग चीजें रहीं ?

हमारी साहित्यिक परंपरा भी कुछ इसी प्रकार की रही। हमारा साहित्य सुसंस्कृत नागरिक के लिए है। अर्थात् व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि सांस्कृतिक मानों और मूल्यों से संस्कारित 'चरित्र' के लिए ('शुद्ध कविता की खोज' में दिलकर ने व्यक्तित्व और चरित्र के बीच का अंतर बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है।) हमारा साहित्य सहृदय के मनः प्रसादन के लिए था। उसे विचलित करले, झकझोरने, अस्वस्य बनाने के लिए नहीं है। साहित्य के रसों की परिणति 'विश्रांति' अवस्था उत्पन्न करने वाली थी। करुणा, बीभत्स, भयानक रसों की परिणति भी सुखद नमःस्थिति में होना आवश्यक माला गया था। रसों की सुख-दुःखवादी व्याख्या नियम को सिद्ध करने के लिए अपवाद जैसी यी 'सत्य' से सौंदर्य को ही हमले तरजीह दी और यह सौंदयं 'शिव' से मर्यादित या। परिणामतः जीवन का बहुत बड़ा ययार्थ साहित्य में आने से वर्जित रहा है।

पाश्चात्य शिक्षा से जिल मूल्यों को हमले स्वीकार किया, उनकी प्रत्यक्षतः कतिमय सीमाएं थीं। पाश्चात्य मूल्य थोड़े से शिक्षितों तक सीमित रहे और सर्वया पाश्चात्य मूल्यों को (जिनमें विज्ञानवाद, धर्मातीतता बुद्धिवाद, व्यक्तित्र्याद प्रमुख मूल्य थे) स्वीकार कर चलने वालों का प्रभाव भारतीय मल पर नहीं पड़ा। उनका पड़ा जिन्होंने मूल भारतीय को सुरक्षित रखकर ही पाश्चात्य विचारों को अपनाया अरविंद घोष, विवेकानंद, तिलक, महात्मा गांधी । विशुद्ध पाश्चात्य संस्कृति को आदर्श मानकर चलने वाले लेखक हमारे यहां जो हुए. उनको स्वीकारा ही नहीं गया ।

फलतः आज भी हमारे साहित्य में भारतीय मन के अनुकूल प्रवृत्तियां जबर्दस्त रूप में साहित्य को प्रभावित कर रही हैं। रोमांटिसिज्म, पुनरुज्जीवलबाद, आदर्शवाद एवं पलायनवाद के विभिन्न रूप-इल प्रवृत्तियों ने भारतीय मानसिकता को बहुत ही जकड़ लिया है। फलतः हमारे साहित्य में वाक्रामकता, संघर्ष, विरोध, वर्जनाओं के विभिन्न रूप (स्वप्न, दिवास्वप्न, फॅटसी, यौन बिबों की प्रचुरता) अकेलेपन की तीव्र पीड़ा इत्यादि का चित्रांकन अधिक पैमाने पर नहीं हुआ-इधर जो हुआ है, उसपर नकलीपन का आरोप किया जाता है-वह बहुत गलत भी नहीं है। इसके कुछ उदाहरण दिये जा सकते हैं। हमारे लेखक साहसी कम है-जब संभोग की स्थितियों का वर्णन करने के स्थल आते हैं तो वे या तो सूचित कर टाल देते हैं। (इसके लिए आलोचक प्रशंसा भी करते हैं, फिर असल में कितनी ईमानदारी से करते हैं. पता नहीं)। अथवा ऐसे प्रसंगों का प्रतीकात्मक वर्णन करते हैं या काव्यात्मक (सूरजमुखी अनोरे) बलाकर छोड़ देते है लारेंस, हैलरी मिलर ('प्लेक्सस','सेक्सस' के वर्णल), लोगोकोव्ह या अल्वतों मोराविया की समानता की बात ही छोड़िये, निकट भी कहीं नहीं आते। संभोग की स्थितियों का अत्यंत ऐंद्रिय, त्तिनात्मक, आवेगपूर्ण चित्रण देने के स्थान पर ये इतिवृत्तात्मक वर्णन करते है अथवा लिजलिजे संकेत भी करते हैं।

संघर्ष का जो एमिल जोला ने 'जमिनल' में भूखी एवं पीड़ित नारियों और उनकी अस्मत का सौदा करने वाले दुकानदार के बीच दिखाया है, वैसा प्रसंग कहीं पढ़ले को नहीं मिला। भूख का जैसा चित्रण डिकन्स के 'ए टेल ऑफ टु सिटीज' में या जोला के 'जमिनल' में मिलता है. अकाल का जीवंत चिंतन 'गुड अर्थ' में मिलता है या मनुष्य की घोर दरिद्रता, वंचना और भूख का प्रत्ययकारी चित्र स्टेल बैंक के 'प्रेप्स आव द रैय' में मिलता है-वैसा भयावह वास्तव का प्रत्ययपूर्ण चित्र कितने भारतीय उपन्यासों में मिलता है

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

? लेखक की शक्ति का एक प्रमाण यह है कि वह प्रसंग का निरूपण या कथन न कर प्रत्यक्ष बिंबात्मक चित्राकल करे। हमारे यहां चरम भावात्मक स्थलों का 'वर्णन' अधिक होता है, चित्रांकन कम। इसका संबंध जीवन का उत्तेजक, उत्कट, तीव्र रूप में अनुभव करने से है-हम शायद उतने मुक्त, स्वच्छंद जीवंत नहीं हो सकते है।

भारतीय साहित्यकार की मानसिकता एक सीमा से बंधी हुई है, जिसमें उनके साहित्यिक, सामाजिक एवं पारिवारिक विचारों के बिंब प्रतिबिंब एवं संकेत मिलते है। अधिकतर साहित्यकारों ने समय एवं स्थिति के अनुसार अपनी सीमाओं, अवधारणाओं एवं विचारों को प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चन्द्रकान्त बान्दिवडेकर, उपन्यास स्थिति और गति, वाणी प्रकाशन लयी दिल्ली, संस्करण 2014 पू. 49
2. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार, विश्वविद्यालय पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, संस्करण 2009. पू. 1
3. चन्द्रकान्त बान्दिवडेकर, उपन्यास स्थिति और गति, वाणी प्रकाशन लयी दिल्ली, संस्करण 2014 पू. 50
4. आलोक गुप्त, भारतीय उपन्यास की अवधारणा और स्वरूप, राजपाल एण्ड सन्न दिल्ली संस्करण 2012. पू. 1
5. अंजना मुबेल, विवेकीराय का गद्य साहित्य आंचलिकता, परम्परा और आधुनिकता के संदर्भ में, अन्नपूर्ण प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2015. पू. 15

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

The Allegorical Study of William Golding's Lord of the Flies and Its Significance

[1]Devesh Rao Bouddha

[1]Research Scholar,
Deptt. of English
Jiwaji University, Gwalior (M.P.)

[2]Dr. M.S. Rathore

Professor of English,
Govt. Girls College, Shivpuri
(M.P.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15025940

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

In the words of Jesus in St. Mathew, 18:4, "The greatest in the kingdom of heaven is the one who humbled himself and becomes like this child," childhood is presented as a state of innocent goodness, a state which may be regarded as the kingdom of heaven on earth. As adults, fallen from this happy state, we may hanker after a return to it and the possibility of such a conversion is held out to us by Jesus in the Biblical passage, St. Mathew, 18:3, "I assure you that unless you change and become like children, you will never enter the Kingdom of Heaven." There is room for optimism about human nature of our Universe, for the speaker is the Creator and loving ruler of the Universe who came down to earth to suffer and die so that we might be redeemed or rescued from our wickedness and restored to the original purity and happiness as we see in children and remember as our experiences of childhood.

But we live in a cruel world which can only be governed by malevolent demons whose delight is to torture us. If we wish to see an image of these dark gods or devils we need to look no further than children or our childhood, need only examine the ghastly and ferocious play of children, where we see how little devils torture and kill insects for fun, playing God with flies. From within and without we are beset by evil-in our human. The nature there is a terrifying propensity towards wanton cruelty which is evident even in children. There are number of occasions in the Bible which highlights that every inclination of man's heart is evil from childhood. David confesses before the Lord in Psalm, 51:5, "I have been evil from the day I was born; from the time I was conceived I have been sinful."

Keywords: kingdom, humbled, conversion, nature, children.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

One allegorical feature of Golding's Lord of the Flies (1954) a powerful first novel, written with style and authority, is that the innocence of the child is a crude fallacy, for Homo-sapiens have by nature a terrible potentiality for evil, which cannot be controlled and eradicated by any humane political system, no matter how respectable.

This novel enjoyed a modest initial success. Lionel calls it *"One of the most striking literary phenomena of recent years and a book that seem to have captivated the imagination of a whole generation".*[(1)] It is hard to think of another first novel that moves forward with such sureness and confidence. Part of the explanation, of course, is that it was not his first novel. Golding remarked in a television interview in 1959 that he spent *"ten years, perhaps, learning to write by imitating other people and learning very late that, of course, I was merely writing other people's novels indeed of my own".* [(2)] This novel, quickly became both a campus cult-book and an examination text and was filmed in 1963.

Lord of the Flies is first and foremost a gripping adventure story: it falls well within the main stream of several English literary traditions. It's a boys' book as are Treasure Island, The Wind in the Willows, A High Wind in Jamaica and other books primarily about juvenile characters which transcend juvenile appeal; *"it is in the tradition of the survival narrative, along with Robinson Crusoe, The Swiss Family Robinson and even Barrie's Admirable Crichton".* [(3)] In addition to being an adventure story, the novel has important dimensions, morally, psychologically and theologically.

It has been variously interpreted as religious, political, psychological and anthropological study. *"In the essay "Fable", in The Hot Gates Golding avers that Lord of the Flies is a multi-layered work and open to various interpretations".*[(4)] It highlights although social phenomenon that are concerned to the human society. It is said, "*The novel has been plausibly interpreted as a Christian Parallel and Greek tragedy and less plausibly with reference to neo-Freudian, Jungian, and Marxian concepts".* [(5)]

James R. Baker and Bernard Dick conclude that the novel is an allegory on the disintegration of society due to a tragic flaw in human nature: man fails to recognize, and thereby appease, the irrational part of his soul. *Howard Babb, argues that the "innocent pride" attributed to the boys is pride in their own wisdom.* As Jack says, "After all we're not savages, we're English and the English are best at everything".[(6)]

E.L. Epstein believes that the Freudian psychoanalytic theory is relevant: *"The Devil is not present in any traditional religious sense, Golding's Beelzebub is the modern equivalent, the anarchic amoral, driving force that Freudians call the Id".* [(7)]

Viewed from another perspective, the novel becomes what some commentators call an anti-Utopian satire. For the island society is microcosmically a human society, related to the 'grown-up' society that occasioned the Original fall from the skies. *"Anthropologically the society is a mirror of the first primitive societies of*

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

prehistoric man; its progress illustrates a biological maxim: that the development of the individual recapitulates in capsule time the development of the species". [(8)]

Further we see "*The tale can be viewed in social psychological terms to show how intelligence (Piggy) and common sense (Ralph) will always be overthrown in society by sadism (Roger) and the lure of totalitarianism (Jack). Seen in political terms it is a dramatization of 'the modern political nightmare'".* [(9)] in which responsible democracy is destroyed by charismatic authoritarianism.

Terms such as allegory, parable, fable, science fiction, romance have been variously suggested. Judging from his comments in the essay "Fable" Golding's own preference is the term fable, which he once defined as *"allegory that has achieved passion".* [(10)] Another persistent classification that has attended to the book's intellectual schemata is affinity to neither romance nor realism, its definition as neither parable nor fable, but its relation to the Christian apologia. Frederick Karl's discussion in A Reader's Guide to the Contemporary English Novel, was first to suggest that Golding wrote religious allegories whose conceptual machinery undermines the 'felt life' of the tale: *"The idea...invariably is superior to the performance itself".* [(11)]

This passage really sums up all the pertinent critical attitudes with regard to this text: *"It is, in fact, a cannily constructed perhaps contrived-allegory for a twentieth-century doctrine of Original sin and its social and political dynamics and it conforms essentially to a quite orthodox tradition not really more pessimistic than the Christian view of man".* [(12)]

Reacting against the Romantic notion that man is basically noble, if freed from the fetters of society, Golding insists that evil is inherent in man; a terrifying force which he must recognise and control.

Golding's experiences in World War II provided him with a tremendous insight into human nature. He realised that everyone had within him the potential to be utterly brutal should circumstances demand it. His essay, 'Fable' provides a clear and interesting statement of the intellectual background which lay behind the novel. He remarked that before the World War II *"I believed in the perfectability of social man, that a correct structure of society would produce goodwill, and that therefore you could remove all social ills by a reorganization of a society...but after the war, I did not because I was unable to. I had discovered what one man could do to another".* [(13)] He realized how rational intelligence and material progress made man more corrupt, violent and destructive. *Golding said, "World War II was a turning point for me. I began to see what people were capable of doing".* [(14)] The impact of this realization was that this potential for greed, innate cruelty and selfishness lay within all of us, not just our war-time enemies, waiting only for circumstances suddenly to unleash it into a powerful manifestation. It was this observation that led Golding to investigate a theme common to all his novels: man's capacity for inhumanity to man and the point in time when man fell from the perfect state of innocence into which he was born.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Experience of war, as well as of such totalitarian regimes as Fascism and Stalinism made Golding realize that *"man was sick-not exceptional man, but average man...the condition of man was to be a morally diseased creation"*. [(15)] When he put this into theological terms, this is how he expressed his notion of the morally diseased creation in an interview:

Man is a fallen being. He is gripped by Original sin. His nature is sinful and his state perilous. I accept the theology and admit the triteness, but what is trite is true; and a truism can become more than a truism when it is a belief passionately held. I looked round me for some convenient form in which this thesis might be worked out and found it, in the play of children. I have lived for many years with small boys, and understand and know them with awful precision. I decided to take the literary convention of boys on an island, only make them, real boys instead of paper cutouts with no life in them, and try to show how the shape of the society they evolved would be conditioned by their diseased, their fallen nature.

Since it is a simple statement about the darkness of man's heart, it would be saying nothing that has not become a religious and perhaps even psychological common place. These comments suggests the initial idea or thesis which governs the novel. It could be summarized that the book is governed by the idea that man is a fallen creature.

Viewed in anthropological terms of the Fall, Lord of the Flies is a sequel to The Inheritors. In The Inheritors, Golding shows that the fragmentation of man's consciousness constitutes the Fall. W.H. Auden, in one of his poems, states how the Fall has fragmented man's consciousness into four faculties-intuition, feeling, sensation and thought. Simon, Ralph, Jack and Piggy the four main characters in the novel may be said to represent the four faculties respectively. The clash among them is in its essence symbolic of the various pulls and pressures man experiences on the existential level as a result of his fragmented consciousness.

The overall picture of man's nature which emerges from the novel is that a return to the state of nature, an escape into primitivism, leads only to the unleashing of brutality, greed for power, sadism in the most naked and brutal forms, to the horror of orgiastic and murderous midnight dances and human heads stuck on poles. It is a grim view of human condition.

There is no rescue, no way out and the ending of the novel is anything but happy. But to regard it as such would be to ignore the prophetic vision of Simon.

Golding has remarked, "I am by nature an optimist, but a defective logic or a logic which I sometimes hope desperately is defective-makes a pessimist of me." The tension between optimism and pessimism, between hope, and despair is characteristic of Golding's fiction.

When questioned about the full meaning and wider implication of the book, Golding remarked: "I think the book was a kind of escape out of a drab England into the South seas-followed by a sad realization that, even if

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

you make your surrounding beautiful, you will take yourself with you, ...I felt a tremendous visional force behind the whole book. At the end, for example, there's a scene where Ralph is fleeing from the fire on the island and the point is not just that the boy is being hunted down, but that the whole natural world is being destroyed. That idea was almost as important to me as Ralph himself: the picture of destruction was an atomic one, the island had expanded to be the whole great globe. The book concerned what human beings were doing to each other and to the world in which they lived."

The boys return to nature then, is not an idyll, but a nightmare. Piggy's view of the matter, if only they would spot them, they would be saved, is a comforting view of the book, since it seems to endorse the view that our civilization is rational and peaceful. But to take such a view is to deny the beast in us. Piggy's faith in grown-ups seems to be sadly misplaced. Displaying typical commonsense and faith in the known laws of science he tries to reassure Ralph: "The trouble that it wouldn't work".

We aspire to reasonableness and would like to construct and live in rational societies, but the horrible truth is that man's organized civilization and sophisticated systems of communications have failed to work, have been destroyed or have broken down in the nightmare of nuclear war. The nature of the beast within us, the innate propensity towards violence, cruelty and selfish and self-destructive wickedness makes such optimistic schemes incapable of realization. It's heart breaking to see how friendship and fair-play are replaced by hostility and tyranny. Our civilizations are condemned as barbaric and monstrously destructive.

Reference

1. Lionel Trilling, "Lord of the Flies," Mid-Century (Oct. 1962), p. 11.
2. Jack I. Biles, Talk: Conversations with William Golding (New York: Harcourt, 1970), p. 15.
3. Oldsey and Weintraub, The Art of William Golding (New York: Harcourt Brace and World, 1965), p. 16.
4. William Golding, "Fable," in The Hot Gates, p. 98.
5. Howard S. Babb, The Novels of William Golding, Second edition (New York: Colma University Press), 1986. Virginia Tiger, William Golding: The Dark Fields of Discovery (London: Calder & Boyars, 1974). Points out Simon as a "Christ-figure and a 'saint'." Golding's interview to Frank Kermode, "The Meaning of it all," Books and Bookmen, 5 (October 1959), pp. 9-10.
6. William Golding and James R. Baker, "An Interview with William Golding", Twentieth-century Literature, 28 (1982), pp. 165-66. Bernard F. Dick, William Golding (New York: Twayne, 1967), pp. 26-33.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

7. E.L. Epstein, Notes on Lord of the Flies, In William Golding, Lord of the Flies (New York: Capricorn Books, 1959), p. 190.

8. C.B. Cox, “Lord of the Flies,” Critical Quarterly, 2 (Summer 1960), p. 112.

9. V.S. Pritchett, “Secret Parables,” New Statesman (August 2, 1958), p. 146.

10. William Golding, The Hot Gates, p. 88.

11. Frederick Karl, “The Novel as Moral Allegory: The Fiction of William Golding,” A Readers Guide to the Contemporary English Novel (New York: Noonday Press, 1962), pp. 244-61.

12. George C. Herndl, “Golding and Salinger: A Clear Choice,” Wiseman Review, No. 502 (Winter) (1964-65), p. 310.

13. William Golding, The Hot Gates, p. 86.

14. Quoted by James C. Livingston, “Commentary on William Golding's The Spire,” Religious Dimensions in Literature Generalised, 'Lee A. Belford (New York: The Seabury Press, 1967), p. 7.

15. William Golding, The Hot Gates, p. 87.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

The Critical Study of Moral Vision and Modern Civilization Reflected in the Novels of William Golding

[1]Devesh Rao Bouddha

[1]Research Scholar,
Deptt. of English
Jiwaji University, Gwalior
(M.P.)

[2]Dr. M.S. Rathore

Professor of English,
Govt. Girls College, Shivpuri
(M.P.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

The rapid strides are science and technology when man has become capable of surmounting the gravest of grave physical dangers and difficulties facing him and even gaining ascendancy over the universal order, life should have been pleasant and happy. There should have been a sense of fulfillment and joy everywhere. The writers and writings of the age should have fully echoed these feelings. But, unfortunately, it is quite the opposite. Conditions of poverty and strife continue to prevail, if anything, at a higher level. Social inequalities, injustice and mutual hatred rock the society. The sufferings of others go unnoticed unless forced into a realization the class-conscious society of Stilbourne had taken full advantage of Evie, without once stopping to think that she too was a human being with emotions. Oliver too had been using her for his own ends and was proud of his conquest. But, when Evie turned on him angrily, and, accused his parents and him of hypocrisy, he:

...stood, in shame and confusion, seeing for the first time despite my anger a different picture of Evie in her lifelong struggle to be clean and sweet. It was as if this object of frustration and desire had suddenly acquired the attributes of a person rather than a thing: as if I might as if we might have made something, music, perhaps, to take the place of the necessary, the inevitable battle. So strong was this feeling, despite my fury, that I cried out to her in the empty Square. (The Pyramid, p.111)

Keywords: technology, feelings, sufferings, emotions, conscious, Stilbourne.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

The indifference and the situation is appalling and calls for an explanation. There may be many. But the one that forces itself is that man has not been able to either understand himself and his surroundings or offer any worthwhile solution to the problems facing him. Therefore, in spite of his new found capacity to analyze and scientifically view things, he is not at peace either with the world or himself. Golding finds Piggy no different, though Ralph felt him to be a true wise friend, who could rationalise calmly. anything and everything. Golding says:

> *"Piggy isn't wise. Piggy is short-sighted. He is rationalist.... He's naïve. short-sighted. and rationalist, like most scientists. He's an innocent; he's a complete innocent. He is like scientists, who really think they're getting somewhere in real. genuine, human terms...Piggy never gets anywhere near coping with anything on that island at all. He dismisses the beast, he dismisses the beastie, he says there aren't such things as ghosts, not understanding that the whole of society is riddled with ghosts....Piggy understands society less than almost anyone there at all He's a scientist".* (1)

The belief that in reality scientists undermine human values and can offer no cure to the ills of the society is strong. It is little surprising then that writer after writer of the modern age. like William Golding, trace back the inherent faults of the society to science and technology, which have completely changed the way of thinking and living. It has given rise to a freedom which, unchained, has spelt doom and destruction at every place where it has been misused. The two World Wars stand testimony to this. Both.

> *"War is fundamentally immoral.... "One must be for or against. I made my choice with much difficulty but I have made it. Perhaps it was the last choice I shall ever make. Accept such international immorality. Mr. Mount joy, and all unpleasantness's are possible to man. You and I. we know what wartime morality amounts to. We have been communists after all. The end justifies the means".*(2)

According to Mount joy I could see this war as the ghastly and ferocious play of children who having made a wrong choice or a whole series of them were now helplessly tormenting each other because a wrong use of freedom had lost them their freedom.

Though belonging to opposite warring nations, could see little justice in the war carried out against each other by their countries. But, man finds cruel satisfaction not only in war but even after that. The death and misery that he has caused does not prick his conscience. Rather, he is happy about it. He has become so materialistic that he does not hesitate to make money even out of the war ruins. Yes. After the war, the irony or comedy of it, the ruins become a subject of study and amusement, when exhibited:

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

> *"The bookseller found himself thinking that after the war if there ever was an after the war they would have to reduce the admission fee to the ruins of Pompeii since so many countries would have their own brand-new exhibitions of the broken business of living".* (3)

This is just one example as to how man had debased himself by his mad pursuit of science and technology, in preference to higher human values, which he is prepared to unashamedly look down upon. The very texture of the society stands modified with the emergence of the concept of a modern and progressive civilisation. In its proud march ahead it has lost all sense of humanity, and, knows not, or, more precisely, does not want to, look back and make-up for many of its unpardonable follies-Pincher Martin had spent his entire life bending the lives of many to suit his own unending selfish desires. But, he was unrepentant till the very end. The modern society has taught man to be small-minded. cruel, hard-hearted and to serve himself best-the members of the Stilbourne society aptly fit this description. They had their own hidden secrets, but were keen on prying into the private life of others. They rejoiced in the shame and suffering of others. They could not bury their differences and get over their ignoble nature for any common cause. Dishonesty, corruption, selfishness, greed rule supreme. What man sees in himself, he reads it in others. An atmosphere of distrust, suspicion and fear prevails, which naturally gives rise to conflicts. Man finds himself unable to adjust to his surroundings and constantly feels endangered. But, having surrendered himself to a social system, he not only finds himself degraded but also unable to get out of its power:

> *"For you and me, reality is this room. We have give ourselves over to a kind of social machine. I am in the power of my machine; and you are in my power absolutely. We are both degraded by this, Mr. Mountjoy. but there it is".*(4)

The type of behaviour that the modern society exhibits, is not limited to any particular person or people, particular place or select period of time or for any accepted cause. Given the same circumstances, people the world over would react in the same manner, irrespective of creed, religion or place. They all suffer from the same ill that haunts the present day society. Commenting on his novel, Lord of the Flies, Golding said:

> *"Lord of the Flies was simply what it seemed sensible for me to write after the war, when everybody was thanking God, they weren't Nazis. And I'd seen enough and thought enough to realise that every single one of us could be Nasis; you take, for example, this bust-up in England over coloured people... In some suburban part of one of our cities; there really was a bust-up over this and you take the South. of North America, where you have a regular bust-up over Negroes. And take anybody's history, what it comes to is this: that Nazi Germany was a particular kind of boil which burst in 1939 or 1940 or*

> *whenever it was. That was only the same kind of inflamed spot we all of us suffer from, and so I took English boys and said. "Look. This could be you." This is really what that book comes to."* (5)

In truth, no one is great. It is a mere illusion to think so and gloat over a self-created atmosphere of superiority. Anyone can be good or bad. No one can lay just claims to greatness or saintliness when it came to sex, be it Father Watts-Watt or Dean Jocelin or the members of the highly class-conscious society of Stilbourne or Talbot, all forgot their position and prestige and secretly or openly indulged in sexual acts and thoughts. The present day society believes In hypocrisy. Genuine love and purity of heart stand vanquished-Pincher Martin madly wanted Mary not because he loved her, but because she had thwarted his attempts to possess her and decided to marry Nathaniel instead. Nathaniel's success had further enraged him. Likewise, Beatrice was the most beautiful girl to Sammy Mountjoy only till he lusted on her. When he found Taffy more satisfying, he left her without any thoughts of the harm that he might have done to Beatrice.

Self-survival is the aim and end of the age, which can be attained only through despicable means. One has to be cunning. tricky and heartless, per force, to achieve one's wishes-Professor L.Tucker (The Paper Men) wanted, to further his own interests, to be the official biographer of Wilfred Barclay. But Barclay refused to earn the necessary paper and accept him as such. Tucker could not be.

however, easily put-off. He followed Barclay wherever he went and tried to act the good man. To earn the good-will of Barclay. he did not hesitate to bait him, through his wife. Mary Lou. When that failed, he stage-managed an accident and tried to show that it was he who had saved Barclay's life and earn his gratitude.

Science and technology have raised the standard of living and materialistic advancement. But, at the same time, has created a mental void and left mankind helpless. Day after day, preparations are afoot to inflict the maximum destruction on others, though the same fate may befall them too. It is hard to believe that some people would act differently from others, when confronted with or placed in the same circumstances:

> *"So I saw that it was no good saying. "Well. fine. America, Britain, France, China, have all won. against the dirty swine," Because I just didn't believe it. I saw that humanity had been fighting against itself in a kind of endless war. But what had been fighting and what had been doing all these things? On the whole... if you could take the people out of the concentration camps and make concentration-camp guards of them, the situation would not be altered materially."* (6)

A free-hearted laughter that brings sunshine and health all-round is missing. Normal life stands disrupted in the modern society. There is always a sense of longing, a suspense, an uneasiness and a fear of the unknown.

A sense of achievement no longer exists. Though simple, the Neanderthals in The Inheritors were a contented and united lot, full of love, even for the youngest member of the family. Liku, and genuine concern for the eldest, Mal. They were obedient. Their wants were simple and they did not greed for more and more. They found enjoyment even in the ordinary things of life. Since they bore no enmity towards others, they could not understand the evil designs of the Homo Sapiens. Golding felt that they were too good to suit the modern way of living:

> *"I picture the Neanderthals as a primitive but good race that existed before the Fall, wiped out by Homo sapiens simply because it wasn't evil enough to survive. Its animal innocence was no match for our capacity for surviving at all costs. It's an odd thing-as far back as we can go in history we find that the two signs of Man are a capacity to kill and a belief in God".* (7)

Sammy Mount joy's life as a small boy, in Rotten Row, was equally good. Though devoid of modern refinement and amenities, the carefree life of its inhabitants impressed him most. His attainments in life notwithstanding, he yearned for his days in Rotten Row. The social life of Rotten Row was not enviable, with its petty quarrels and unconcern, in the face of helplessness, whenever events of birth, death or arrests took place. They were a world within a world, a human proposition, a way of life, an entity. But, life in the slum, was welcome:

> *"I can see that time in my mind's eye if I stoop to knee height. A doorstep is the size of an altar, I can lean on the sloping sign beneath the plate-glass of a shop window, to cross the gutter is a wild leap. Then the transparency which is myself floats through life like a bubble, empty of guilt, empty of anything but immediate and conscienceless emotions, generous, greedy, cruel, innocent".* (8)

Modern man is a chronic victim of conflict, contradiction and frustration of basic urges and satisfactions. The major profound and inescapable discords between his normal, personal, emotional demands and social pressures and expectancies now cover all dimensions or orders of human adjustment and wish-fulfillment, so that the face of entire civilisation bears an indelible neurotic stamp.

There is an inordinate, general striving for power, prestige and possessions, with a premium on appropriate and aggressive drives, as providing security through the fortification of one's viable position and status rather than through love. sharing and affection. These are not isolated cases of defense reaction formation, but are essentially comprehensive systems of psychological reassurance against danger, anxiety and fright-average learned patterns that none questions, and that conform to established cultural and institutional norms. It is clear enough that precarious self-status. helplessness, humiliation and frustration instigate the dysfunctioning of

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

larger systems of motivation and meaning-devious but safe bio-cultural mechanisms that establish ego-inflation. megalomania, sadism and enhanced craving for power, domination and exploitation that all consciously or unconsciously allay the pent-up anxieties and hostilities according to institutional and conventional formulas. Not only man's love in all its patterns of expression but also all interpersonal relations and patterns of conduct become markedly distorted. Class etiquette and scale of comfort, class distance, envy and destructiveness are all fetishes and symbols that in modern mass civilisation offer opportunities to energetic, ambitious and aggressive competitors for gratification of their peculiar idiosyncratic, neurotic needs of aggression and fear of potential retaliation and domination.

Reference:

1. William Golding Talk Faber and Faber, London 1978, P. 12-13.
2. William Golding Free Fall Faber and Faber , London 1959, P.140.
3. William Golding Darkness Visible, Faber and Faber , London 1979, P.11.
4. William Golding Free Fall Faber and Faber , London 1959, P.140.
5. William Golding Talk Faber and Faber, London 1978, P. 3-4.
6. William Golding Talk Faber and Faber, London 1978, P. 34-35.
7. William Golding Talk Faber and Faber, London 1978, P. 106.
8. William Golding Free Fall Faber and Faber , London 1959, P.39.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बुंदेली भाषा का इतिहास एवं उसकी साहित्यिक विकास यात्रा

सोनाली बुधौलिया

शोधार्थी, हिन्दी,जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date
05/03/2025
Paper date Publishing Date
10/03/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15041324

IMPACT FACTOR
5.924

शोध सार

बोली का सीधा सम्बन्ध जनता से जुड़ा है, और लोक में बिखरा है, इसी से बोली की ध्वनि प्रकृति, बोली की रूप रतला प्रकृति और बोली की भाव प्रकृति बास्तविकता के अत्यन्त समीप है। लोक के अनुभव सहज होते हैं, सरलता से उपजते हैं और सांस्कृतिक समता में फलते फूलते हैं। लोक के अनुभवों की यह सम्पदा हर स्तर पर बिखरी रहती है। लोकालुभव भाषा को जीवन्तता प्रदान करते हैं, यह जीवन्तता बोली में सर्वत्र मिल जाती है।

बुन्देलखण्ड का लोक जीवन सरलता के साथ समता और सहयोग पर आधारित है। बोली इसी समता और सहयोग को एक से दूसरे तक ले जाती है, पुलक को प्राणवान बनाती है, मुदिता को संदेह कर देती है, करुणा के आंगल में आंसू हो जाती है, उपेक्षा पर उतरकर लिहाज छोड़ देती है, मैत्री के घर पहुंचकर सांप को भी दूध पिलाने की आस्था वाँटती है और चींटी को भी न सताने के भाव में अहिंसा को विस्तार देती है, इसी से लोक की वास्तविकता भावला में है और भावना के रूप बोली और बातचीत देती है।

नाकरलीय-नाकरलीय का ऐलान लोक के अनुभवों को शिखर तक ले गया है, लोक की सहमति को सर्वोपरि मान रहा है और सर्वम् आनन्दमय की भाव भूमि को विस्तार देने वाला है। आनन्द को विस्तार देने वाली इस भावना के सम्मुख सर्व दुख मयं का मंत्र लोक के गले नहीं उतरता। लोक की आस्था सत् चित् और आनन्द में है, और निद्रा भद्रा में है असीम आस्या में है। यही असीम आस्था जीवन को जीने की ताकत देती है। जीवन जीने की अभिलाषा का आदि तो है पर अन्त नहीं है।

मुख्यबिन्दु: सांस्कृतिक, सरलता, आस्था, प्रकृति आस्था

बुन्देलखण्ड का लोक जीवन जिस समता और सहयोग की धरती पर फलता फूलता है उस धरती में मुदिता के साथ है अहिंसा का भाव, किसी को न सताले की आंतरिक लालसा है। इन भावों की सम्मिलित अभिव्यक्ति बोली के माध्यम से रूप लेती है, और प्रभावपूर्ण बनाती है। यह प्रभाव अर्थ को विस्तार देता है, एवं भीतरवारे को सरबोर कर देता है।

(अ) बुंदेलखण्ड का नामकरण-

बुन्देलखण्ड भारत का हृदय प्रदेश है। यह संपूर्ण भू-भाग भाषा, संस्कृति आचार-विचार की एकरुपता के साथ ही भौगोलिक स्थिति के कारण एक सूत्र में बंधा है। प्राचीन काल में इसके रहवासी स्वाभिमान तथा वीरता के लिए विख्यात रहे हैं, इसलिये इस भूमि को वीर प्रसूता भी कहा गया है। (1)

वीर प्रसूता होने के कारण मुगलकाल से अंग्रेजों के शासन काल तक इस संपूर्ण भू-भाग में संघर्ष होता रहा, किन्तु किसी भी प्रशासक का आधिपत्य यहां के लोगों ने स्वीकार नहीं किया और जब अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति और ताकत के बल पर पराधीनता स्वीकार करने के लिए यहां आक्रामक दवाब डाला तो इसी क्षेत्र से वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बज उठा जो धीरे-धीरे पूरे भारत में फैलता गया। अंग्रेजी शासन काल तक विदेशी शासकों का यही प्रयास रहा कि यहां के लोग आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़े रहे तथा शक्ति संचय न कर सकें। इसी दुर्भावना से विदेशी शासक यहां के छोटे छोटे रजवाड़े व रियासतों को प्रोत्साहित करके उनसे दमनकारी कार्य कराते रहे थे। इसका नतीजा यह हुआ कि यह भू-भाग पिछड़ता चला गया और यहां का विकास एकदम अवरुद्ध हो गया।

उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश दो राज्यों में विभक्त यह बुन्देलखण्ड भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश, भाषा-बोली, सामाजिक व्यवहार और संबंधों की ऐतिहासिक विरासत में पूर्णतः एक इकाई है नगर प्रशासनिक तौर पर दो राज्यों में बंटे होने के कारण आर्थिक विकास की योजनाओं के निर्धारण एवं क्रियान्वयन हेतु यह सम्पूर्ण क्षेत्र दो भागों में बटी हुई दो पृथक इकाइयाँ हैं। (2) **मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश राज्य की महत्वपूर्ण ढंग से पृथक विशेषताओं के कारण प्रत्येक राज्य का यह क्षेत्र अपने- अपने राज्य प्रशासन की हमेशा ही उपेक्षा का शिकार रहा है। न तो उकूपकू के छ जिलों का यह बुन्देलखण्ड उतना महत्वपूर्ण है, जितना पर्वतीय या पूर्वी क्षेत्र और न ही मकुप्रकू शासन के लिये यह पथरीला बुन्देलखण्ड उतना महत्वपूर्ण है। परिणाम दोनों ही राज्यों की शासन व्यवस्था से उपेक्षित भारत के हृदय प्रदेश का यह विशाल भू-भाग बुन्देलखण्ड सभी संसाधनों के उपलब्ध होते हुए भी विकास के लिए तरसता रहा है।**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

14-15वीं शताब्दी का बुन्देलखण्ड केवल शौर्य की दृष्टि से ही नहीं ऐश्वर्य की दृष्टि से भी पूर्ण आत्मनिर्भर राज्य या। बुन्देलखण्ड भू भाग का उत्तरी भाग जो कि वर्तमान उत्तर प्रदेश का हिस्सा है, कृषि उपलध कराते हुए आर्थिक सन्तुलन स्थापित किए हुए था। बाद में शनै शनै इस क्षेत्र पर अंग्रेजों का आधिपत्य हुआ तो इस क्षेत्र के शौर्य एवं ऐश्वर्य से पराभूत अंग्रेजों ने इसे सदैव के लिये दो हिस्सों में बांटकर अलग-अलग प्रशासन व्यवस्था के अंतर्गत तोड़े रखने का निर्णय लिया। उन्होंने इस सम्पूर्ण क्षेत्र को टुकड़े टुकड़े करने लाय बैस्ट प्रांत तया सेंट्रल प्रांत में शामिल कर लिया। इस तरह उन्होंने इस सम्पूर्ण भू-भाग की न केवल प्रशासनिक एकता अपितु आर्थिक विकास की रीढ़ ही तोड़ दी थी।

इस प्रकार पहले विदेशी और आजादी के बाद हमारे अपने शासकों ने इस भू-भाग और इसके निवासियों के हितों और जल भावलाओं के विपरीत इसे प्राकृतिक रूप से दो भागों में बाँटकर एक को उत्तरप्रदेश और दूसरे को मध्यप्रदेश के अधीन कर रखा है। फलस्वरूप सांस्कृतिक तथा भौगोलिक एकरुपता के विखंडित होने के साथ ही संसाधनों का बंटवारा हो गया। इसी का परिणाम है कि बुन्देलखण्ड चाहे उत्तर प्रदेश हो, चाहे मध्यप्रदेश में, जैसा पिछड़ा तथा गरीब पहले था, वैसा ही आज है। इस लम्बी मार का असर हम आज भी देख रहे हैं। (3)

बुन्देलखण्ड के जनपद झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर महोबा तया बांदा आदि छह जिलों के अंतर्गत आने वाले बुन्देली भू-भाग उत्तर प्रदेश के अधीन है और छतरपुर पन्ना, टीकमगढ़, सागर, दतिया, भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, विदिशा, रायसेन, जबलपुर, नरसिंहपुर दमोह तथा सतना आदि सोलह राज्यों में आने वाला भू-भाग मध्यप्रदेश के अधीन हैं।

चटर्जी की भारत की राष्ट्रीय एटलस (1964) के अनुसार सम्पूर्ण क्षेत्र का भू भाग चाली एवं अधिकांशतः अवियल (धारबाड़) विध्याल (कुडप्पा) तया प्लीस्टोसीन और दक्कल ट्रेप का निर्मित है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र का भूतल 300 मीटर ऊंचाई तक का मैदानी तथा 300 से 200 मीटर ऊंचाई तक नौतल पठारी भाग है। यहां मुख्यतः लाल, काली तथा दोमट मिट्टी पाई जाती है। सम्पूर्ण क्षेत्र में वर्षा का सामान्य औसत 800 से 875 मिली मीकू तक का है। इसकी कुल लम्बाई 410 किमीकू और चौड़ाई दो लाख वर्ग मीटर से अधिक है, जिसमें दो करोड़ के लगभग आबादी है।

बुन्देलखण्ड के विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके इसके लिए आजादी के पूर्व से ही बुन्देलखण्ड के प्रबुद्ध नागरिक समाज सेवी और राजनीतिज्ञ इसके पृथक राज्य बनाने की मांग करते आ रहे हैं। इस मांग का औचित्य और जोरदार पक्ष पोषण 1955 में केन्द्र सरकार द्वारा गठित राज्य पुर्नगठन आयोग के अध्यक्ष सुविख्यात विचारक श्री पणिक्कर ने किया था। स्वाधीनता के अनन्तर केन्द्र सरकार के स्वराष्ट्र विभाग के सचिव श्री मेलल ले भी विस्तृत अध्ययन के बाद जो रिपोर्ट प्रस्तुत की थी. उसमें बुन्देलखण्ड की विभाजित स्थिति को समाप्त करने की जोरदार वकालत की गई यीकू किन्तु उत्तर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रदेश और मध्य प्रदेश के सबसे बड़े प्रांत होने से प्राप्त होने वाली राजनीतिक शक्ति के सहारे केन्द्र सरकार और सारे देश की राजनीति पर अपना वर्चस्व बनाये रखने की मात्र राजनीतिक स्वार्थ लिप्सा से ग्रसित इन बड़े प्रदेशों के कुछ गैर बुन्देलखण्डी प्रभावशाली राजनीतिज्ञों के कारण पृथक बन्देलखण्ड राज्य बनाने की माँग को अनसुना कर दिया गया।

(ब) बुंदेलखण्ड का क्षेत्र-

भारत संघ तथा संविधान की जिल व्यवस्थाओं के अंतर्गत तथा औत्तित्य के आधार पर इस देश में अन्य राज्य बने है जैसे कर्नाटक केरल, अधिदेश तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा का हिमाचल प्रदेश आदि उन्हों की तरह बुन्देलखण्ड को भी पृथक राज्य का दर्जा मिलना चाहिए, और उन्ही की तरह अपनी क्षेत्रीय भाषा एवं क्षेत्रीय संस्कृति और अपनी उत्त परम्पराओं तया सम्मान के सहारे अपना विकास करने की छूट बुन्देली जनता को दी जानी चाहिए।

इसे संकीर्ण भावना की सजा देने वाले न केवल इस भू-भाग के इसकी जनता के इसकी भाषा तथा संस्कृति के इसकी शानदार गौरवशाली परम्परा के प्रति दुर्भावना के शिकार है बल्कि सम्पूर्ण भारत की भूमि से अनजान तथा अयथार्थवादी नितन के शिकार भी है। (4)

राजनैतिक दृष्टि से भी बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्रजातांत्रिक प्रक्रिया पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। निर्वाचन के मापदण्ड भेदभावपूर्ण है। कई राज्यों में एक लाख से पांच लाख्न मतदाताओं में एक सांसद निर्वाचित होता है. जबकि बुन्देलखण्ड से आठ से बारह लाख मतदाताओं पर एक सांसद तुला जाता है। इसी प्रकार पूर्वी उत्तर प्रदेश से एक से दो लाख्न मतदाताओं में एक विधायक चुना जाता जबकि बुन्देलखण्ड क्षेत्र से लोकसभा तया विधानसभा में जनसंख्या के आधार पर भी न्यायोचित प्रतिनिधित्व नहीं होता है, जबकि पिछड़े क्षेत्रों को अधिक प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। आश्चर्य तो यह है कि अब तक बुन्देलखण्ड का कोई सांसद केन्द्रीय मंत्री नहीं बन पाया था ।

अगर बुन्देलखण्ड किसी एक प्रांत के साथ जुड़ा होता, तो शायद आज इसकी तस्वीर कुछ दूसरी होती । विभाजित बुन्देलखण्ड की कोई आवाज बुलंद करने वाला नहीं है। आधा बुन्देलखण्ड लखनऊ की ओर टकटकी लगाये देख रहा है, तो आधे से ज्यादा बुन्देलखण्ड भोपाल की कृपादृष्टि का मोहताज बना हुआ है।

उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश सरकारों द्वारा जो योजनाएं बनायी जाती हैं. उनसे बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए न्याय नहीं हो पाता जनप्रतिनिधि अपने अपने क्षेत्र के लिए विकास धनराशि को खीच ताल करते हैं। उत्तर प्रदेश में पूर्वी पश्चिम उत्तर प्रदेश के सम्मान क्षेत्र धनराशि का अधिकांश भाग खींचकर ले जाते हैं तथा उप्र के दक्षिण भाग जो बुन्देलखण्ड का क्षेत्र है के लिए धनराशि कम मिलती है। इसी खीचतान में मकूप्र के मालवा छत्तीसगढ़ एवं बघेलखंड लिए जो ऊंची नीती

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पहाड़ियों घाटियों एवं कन्दराओं में व्याप्त है को विकसित करने हेतु अधिक धन की आवश्यकता है। प्रतिनिधित्व कमजोर एवं बटे होने के कारण इन दोनों सरकारों में बुन्देलखण्ड की आवाज नकाराने की तरह उपेक्षित हो जाती है। (5)

बुन्देलखण्ड के लिए यदि किसी प्रकार की कोई धनराशि मिलती भी है तो जो योजनायें बनाई जाती है वे अन्य क्षेत्रों का ध्यान में रखकर बनाई जाती है, और ऐसे अधिकारियों द्वारा बनाई जाती हैं, जिन्हें इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का सही ज्ञान नहीं होता इस क्षेत्र का प्राकृतिक परिवेश भिन्न प्रकार का होने के कारण यहां योजनाएं सफल नहीं हो पाती है। दोनों सरकारों की जो योजना बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए बनती है उनमें प्रथम तो आपस में कोई तालमेल नही होता साथ ही दो राज्यों के क्षेत्राधिकार भी योजनाओ के लिए वाचक होते है।

बुन्देलखण्ड की धरती में जिप्सम, तांबा यूरेनियम ग्रेनाइट पत्थर इमारती पत्थर, गारा पत्थर चूला आदि खनिज सम्पदा के अकूत भण्डार भरे पड़े हैं। वन सम्पदा के अचार लगे हैं और नदी जल शक्ति से विद्युत उत्पादन की असीम सम्भावनायें बिखरी पड़ी है। मगर बुन्देलखण्डियों को हीरा पत्थर व अन्य खनिजों की खुदाई तथा बीड़ी पत्नी की तुलाई या बीड़ी बनवाई जैसे कामों की पूरी मजदूरी भी हाथ नहीं लगती। यदि उपलब्ध सभी प्राकृतिक स्रोतों का सही तरीके से दोहन किया जाये तो बुन्देलखण्ड अपने प्रशासनिक खर्चों के अलावा करोड़ों रुपये विकास के लिये बच सकता है। (6)

उद्योग धंधों की असीम संभावनाओं के बावजूद उनकी निरंतर कमी के कारण यहाँ के निवासी बंधुआ मजदूर बनकर अन्य राज्यों में जीविकोपार्जन के लिए परिवारों सहित दर दर भटकने के लिए विवश है। शिल्प कौशल के नाम पर चंदेरी के वस्त्र शिल्पी आज भी विश्व की सर्वश्रेष्ट साड़ियों का निर्माण करते हैं मगर उनको कोई प्रोत्साहन नहीं है, इसी प्रकार रानीपुर टेटीकाट व शिल्पियों की अनेक गंभीर समस्यायें हैं, जिनकी ओर भी पूर्णतः उदासीनता है बुन्देलखण्ड में खैर आदि के पेड़ होते हैं उनसे कत्या उद्योग हो सकता है, मगर उस दिशा में भी कोई प्रयास नहीं किये गये हैं।

यहां सड़कें व रेलवे लाइन बहुत कम मात्रा में है, क्योंकि उबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण तथा बरसाती नाले व नदियाँ ज्यादा होने के कारण रोड नहीं बन पा रहे हैं, यद्यपि रोड बनाने का कच्चा माल जैसे बालू एवं गिडी पत्थर आदि प्रचुर मात्रा में है फिर भी रोड नहीं बन पा रहे हैं। भोपाल, लखनऊ और दिल्ली में बैठे लेता और अधिकारी बुन्देलखण्ड के दौर पर एक तो आते ही नहीं और यदि आते है तो एक दो शहरों को छूकर चले जाते हैं। यहां के दूर दराज गांवों में उनका दौरा कभी नहीं करते हैं।

आकार की दृष्टि से देखा जाये तो पृथक राज्य का दर्जा प्राप्त प्रदेशों में अधिकतर ऐसे ही है जिनसे प्रस्तावित बुन्देलखण्ड राज्य का क्षेत्रफल के मुकाबले में त्रिपुरा का क्षेत्रफल मात्र 10406 वर्ग किकुमी नागालैंड का 16579 वर्ग किकुमीकू मेघालयका 22409 वर्ग किकूमी मणीपुर का 22376 वर्ग किकूमीकू मिजोरम काकू 21090 वर्ग किकूमीकू हरियाणा का 44722 वर्ग किमीकू हिमाचल प्रदेश का 55676 वर्ग किकुमीकू ही है। दूसरी तरह से कहें तो उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उडीसा, बिहार, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र के बाद नवें नम्बर का सबसे बड़ा राज्य प्रस्तावित बुन्देलखण्ड राज्य ही होगा। इस प्रकार राज्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए, क्षेत्रफल या आकार कोई शर्त है तो बुन्देलखण्ड यह योग्यता बखूबी है।

सन् 1955 में माननीय शिवकर की अध्यक्षता में बैठे राज्य पुर्नगठन आयोग ने जो भाषा संस्कृति के आधार पर राज्यों का निर्माण को नीति और सिद्धान्त बलाये थे, उस दृष्टि से भी बुन्देलखण्ड राज्य का निर्माण अवश्य हो जाना चाहिए। यदि हिन्दी भाषी उपबोलियों के आधार पर राजस्थान, हरियाणा, बिहार तथा हिमाचल प्रदेश का निर्माण हो सकता है तो बुन्देलखण्ड प्रान्त भी बनने के लिए बुन्देली भाषा बोली एवं संस्कृति अपने आप में एक ठोस आधार है अतः बन्देलखण्ड प्रांत का निर्माण होला आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अवस्थी रामरतन स्मारिका बुन्देलखण्ड अंक, बलभद्र पुस्तकालय लौगॉव म. प्र. संस्करण 1995-96 पू. 64
2. अवस्थी रामरतन, स्मारिका बुन्देलखण्ड अंक, बलभद्र पुस्तकालय नौगाँव म.प्र. संस्करण 1995-96 पू. 77
3. अवस्थी रामरतन, स्मारिका बुन्देलखण्ड अंक, बलभद्र पुस्तकालय लौगॉव म.प्र. संस्करण 1995-96 पू. 64
4. वहीं पू. 70 गुप्त नर्मदा प्रसाद, बुन्देली संस्कृति और साहित्य, मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल, संस्करण 2001. पू. 10 गुप्त नर्मदा प्रसाद, बुन्देली संस्कृति और साहित्य, मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल, संस्करण 2001 पू. 19

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

श्री महावीर प्रसाद का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रासंगिकता

सोनाली बुधौलिया

शोधार्थी, हिन्दी,जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15041586

IMPACT FACTOR

5.924

शोध सार

ज्ञान की महिमा अपरम्पार है। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कि समस्त यज्ञों में ज्ञान यज्ञ सर्वोत्तम है। संसार सागर के संतरण में ज्ञान-नौका ही सर्वाधिक उपयोगी है, इसलिए ज्ञान-साधना सभी के लिए अपेक्षित है। ज्ञान के विभिन्न रूपों के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के साधन भी अनेक हैं। ज्ञान-प्राप्ति के लिए श्रद्धा, भक्ति, विश्वास, आस्था आदि परमावश्यक हैं, क्योंकि श्रद्धावान लभते ज्ञाल, किन्तु आधुनिक परिवेश में, इल गुणों के साथ ही शिक्षार्जन भी आवश्यक है। कहना चाहिए विद्यावान लभते ज्ञान।

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया का जन्म ग्राम बसंतपुरा, तहसील रौन, जिला भिण्ड म.प्र. में 22 जून 1935 ई. में हुआ है। मनुष्य ईश्वर की सबसे सुन्दर कृति है। अपने जीवन को किसी भी विधा में डाल सकता है. जो साहित्यकार के लिए एक स्थिति और गति है, जिसके द्वारा साहित्यकार समाज में प्रबोधिनी का कार्य करता है।

विनोदप्रियता, कलात्मक प्रतिभा और मानवीय गुणों के कारण वे सबका मन सहज भाव से अपनी ओर खींच लेते थे। किसी का दुःख तो वह देख ही नहीं सकते थे, उनके सेवाभाव को प्रेरित करने के लिए यह कतई जरूरी नहीं या उत्त नैतिक संस्कारों की नींव डाली उन्हें प्रेम, सहृदयता का पाठ पढ़ाया। बचपन में कमाई गई यह नैतिक पूँजी ही आगे चलकर उनके साहित्य की सुदृढ आधारशिला बनी है।

मुख्य बिन्दु- ज्ञान- साधना, ज्ञान-प्राप्ति, श्रद्धा शिक्षार्जन, सेवाभाव, सहृदयता

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महावीर प्रसाद चंसौलिया के पुत्र एवं पुत्रियों की संख्या 5 जिसमें डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया, प्राध्यापक हिन्दी, श्री संतोश चंसौलिया दुकानदार, श्रीललित चंसौलिया, श्री पंकज चंसौलिया एवं पुत्री श्रीमती जयंती चंसौलिया डॉ. चंसौलिया के पिता श्री पन्नालाल चंसौलिया एक जमीदार ये उनके सबसे पड़े बेटे श्री कृष्ण प्रसाद, इसके बाद श्रीउमा शंकर ये जो अब नहीं है। इनकी दो बहने ये जिनके नाम गंगा और त्रिवेणी थे।

(ब) शिक्षा-दीक्षा-

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया का नाम लेते ही भारतीय संस्कृति की एक जगमगाती मूर्ति सामने खड़ी हो जाती है मनसा, वाचा, कर्मणा वे भारतीय संस्कृति के साक्षात् रूप हैं। सुदर्शन, सौम्य रूप है यह। ऐसा रूप जो सहज है, स्वाभाविक है। उनके विचारों के मिश्रण, आडम्बर, प्रपंच, एवं प्रदर्शन नहीं है। आसन असन बसन में सर्वत्र निर्मल विवेक की छाप । मिताचार, रहनि-व्वनि- बोलनि सुसंस्कृत, सुरुचिपूर्ण, मधुर मोहन। यह ओदा हुआ, आरोपित रूप नहीं है। मुखौटा उनकी प्रकृति के विरुद्ध है। अन्तर्बाह्य एक भीतर आन, बाहर आन आन विरूद्ध है। वे संस्कृतनिष्ठ, आध्यात्मिक और आस्थावान पुरुष हैं।

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया जी ने औपचारिक शिक्षा मात्र हाई स्कूल तक प्राप्त की किन्तु स्वाध्याय द्वारा उन्होंने साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि विषयों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया तथा गुजराती व हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी बंगला, मराठी आदि भाषाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया है। (1)

(स) विवाह एवं नौकरी-

विवाह पारिवारिक जीवन की आधारशिला है जिसकी नींव सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। विवाह सामाजिक दृष्टि से करार है और धार्मिक दृष्टि से एक संस्कार है। कामवासना की पूर्ति एवं संतान प्राप्ति के लिए समाजमान्य पद्धति के रूप में विवाह को स्वीकार किया है । स्त्री-पुरुष के दांपत्य जीवन के सूत्र में बाँधने वाली रीति को विवाह माला है। भारतीय समाज में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक माना जाता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इसे तोड़ना उचित नहीं माना जाता है। वैदिक विवाह, गांधर्व विवाह, प्रेम विवाह, बाल विवाह, बहु विवाह एवं अनमेल विवाह आदि विवाह की कई प्रयाएँ और प्रकार हैं। विवाह गृहस्थ जीवन का प्रवेश द्वार होने के कारण भारतीय संस्कृति में विवाह का अनन्य साधारण महत्त्व है। विवाह संस्कार वैदिक शास्त्र के अनुसार करने के लिए विवाह के पूर्व और विवाहोनर जिस अनुष्ठान को तथा पूजाविधि को संपन्न किया जाता है। महावीर प्रसाद चंसौलिया कि ससुराल गोवरधनपुरा जिला जलौन उ.प्र. में है, जिनके ससुर का नाम पं. चुन्नीलाल बुधौलिया जो ग्राम प्रधान के पद पर रहे हैं। वे कर्मकाण्ड और पाण्डित्य मे ज्ञान में विशेष रूत्ति रखते थे। उनके दो पुत्र है ज्ञान मोहन एवं हरी मोहन है। डॉ. हरीमोहन बुधौलिया हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के रहे है। (2)

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया की पत्नी का नाम श्रीमती दयाला देवी चन्सौलिया है जो आदर्श गृहणी के रूप में जानी जाती रही है। उनका व्यक्तित्व, सुन्दर स्वच्छ एवं पारदर्शी रहा है। डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया दो विभागों से जुड़े हुये, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक एवं चिकित्सक है।

(द) व्यक्तित्व के घटक-

डॉ. चंसौलिया बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार है। उन्होंने अपनी गद्य एवं पद्य शैली के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को इन्द्रधनुष की सतरंगी आभा से दीप्तिमान किया है। डॉ. चंसौलिया के व्यक्तित्व की पूर्णता उनके बहुरंगी व्यक्तित्व पर आधूत है वे एक श्रेष्ठ साहित्यिकार चिंतक, विचारक, कवि एवं समाज सेवक है। वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अपने चिंतन के माध्यम से उसे महीमा मण्डित किया है जिसमें मानवतावाद एवं मनोविज्ञान का समजस्य स्वरूप दिखलाई पड़ता है।

उन्होंने उत्सव प्रधान भ्रष्ट राजनीति, सामाजिक विद्रूपताओं, प्रशासनिक विसंगतियों, सांस्कृतिक पतन, रूढ़ परम्पराओं और मानवीय दुर्बलताओं के विरूद्ध अपले आक्रोश को मुस्कुराहटों में बाँधकर अत्यन्त जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है।

मनुष्य को अपनी जिस समस्या का निदान जाग्रत अवस्था में प्राप्त नहीं हो पाता वह उसे स्वप्नावस्था अथवा स्वप्नकाल में प्राप्त हो जाता है। वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कवियों एवं मूर्तिकारों आदि को अपनी अपनी समस्याओं का निदान प्रायः स्वप्न में ही मिल जाता है। अब प्रश्न उठता है कि क्या सभी स्वप्न मूर्तरूप

में परिणित हो जाते हैं या सत्य सिद्ध होते हैं। यह स्वप्न दर्शी की मानसिकता स्थिति काल परिस्थिति आदि पर निर्भर होता है। मनुष्य हजारों प्रकार के स्वप्न देखता है जिनमें से कुछ शुभ और मंगलकारी होते हैं और कुछ अनिष्ट और अमंगलकारी होते हैं।

मंगल सूचक स्वप्न के दिखने पर हमें क्या सावधानी वर्तनी और अमंगल सूचक स्वप्न के दिखने पर उसके प्रभाव से बचने के लिए क्या करना चाहिए। इन्हीं सारी समस्याओं का निदान इस कृति में दिया गया है। रचनाकार ले सामान्य स्वप्न शुभ-अशुभ प्रेम सम्बन्धी एवं अत्यन्त अशुभकारी स्वप्नों का विस्तार से वर्णन किया है। कदाचित ही कोई स्वप्न ऐसा रह गया हो जिसे इस कृति में स्थान न दिया गया हो।

जितना महत्वपूर्ण स्थान हमारे जीवन में स्वप्नों का है उतना ही शकुलों का जनमानस में स्वप्न फलों की ही भाँति शकुन फलों की भी पुरातलकाल से मान्यता रही है जिस प्रकार स्वप्नों के तार भविष्य में घटले वाली घटनाओं से जुड़े रहते हैं उसी प्रकार शकुलों के भी। किसी भी शुभकार्य और यात्रा के पूर्व शकुन विचार को महता को नकारा नहीं जा सकता है। इन शकुलों में कुछ शुभ और कुछ अशुभ सूतक शकुल होते हैं। इल शकुन वित्तारों में पशु पक्षियों, जीव जन्तुओं और मानव समुदाय की कृतियों और विकृतियों को लिया जाता है। यही नहीं कुछ दृश्यों और वस्तुओं के आधार पर भी शकुल फलों की घोषणा की जाती है। (3)

शकुन विचार के अन्तर्गत पशुओं में गाय बछड़ा श्वान, बिल्ली, सियार सुअर, बन्दर, बैल, भैंस, भेडिया, हिरण, गर्भव (गधा) तथा पक्षियों के अन्तर्गत मोर कोयल, पपीहा, मुर्गा, कौया, गौरैया, नीलकण्ठ, चील, कबूतर उल्लू आदि को स्थान दिया गया है। इनकी बोलियों और क्रियाकलापों के आधार पर ही शुभ या अशुभ शकुन का वित्तार किया जाता है। इसी प्रकार मानव समुदाय की स्थिति भी विचारणीय होती है। सरीसृप वर्ग में छिपकली गिरगिट, नेवला, सर्प एवं नेटक आदि के पतन और क्रियायों को आधार मानकर शकुल फल की घोषणा की जाती है। शुभ शकुन फलों में, मछली, दूध दही चावल एवं जल पूरित घट आदि वस्तुओं को मंगल सूत्तक माला जाता है। कुछ ऐसे शकुन भी होते हैं जो केवल अशुभ सूचक हो होते हैं इनका उल्लेख भी इस कृति में विस्तार से किया गया है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(य) साहित्यिक उदय की पृष्ठभूमि-

सृजन के मूल में कतिपय प्रेरणाएं अन्तलिहित होती हैं जो रतनाकार को सृजनशील बना देती हैं। ये प्रेरणाएं जन्मजात संस्कारों, परिवेश और परिस्थितियों के प्रभावों, विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिये गये सुझावों व उपदेशों के रूप में क्रियाशील रहती हैं और जाने-अनजाने ही व्यक्ति के भीतर बाली अमूर्त कला को मूर्तियन्त कर देती हैं। नागर जी का जन्म जिस परिवार में हुआ, जिन परिस्थितियों में जिस परिवेश में उनका बचपन बीता, उन्होंने ही उनमें भावी लेखकीय जीवन के संस्कारों को बीजारोपित किया ।

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया ने अपने विचारों को गद्य एवं पद्य दोनों के माध्यम से व्यक्त किया है। अधिकतर उनके विचारों में मानव के कल्याण के विषयों को व्यक्त किया है, जिससे आगे आने वाली पीढ़ी के लिए एक नया मार्गदर्शन मिल सके।

महावीर प्रसाद चंसौलिया एक सहृदय एवं बहुमुखी रचनाकार हैं। आपने अनेक विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर समाज उपयोगी कृतियों का प्रणयल किया है । आपने जहाँ रामचरित मानस पर आधारित शोधपूर्ण कृति की रचना की है तो वहीं ज्योतिष दोहावली जैसी कृति रचकर ज्योतिष जैसे कठिन और श्रम साध्य विषय को सरस काव्य शैली में प्रस्तुत कर अभूतपूर्व ख्याति अर्जित की है। काव्य सुधा कृति में आपने जहाँ समाज राष्ट्र के विद्रूप चित्रों का उद्घाटित कर अपने सत्ते कवि धर्म का निर्वाह किया है तो वहीं दोहा मुक्तक मन्जरी कृति में समाज मालय जीवन ज्योतिष, बुन्देली संस्कृति, श्रृंगार, नीति, राजनीति, आयुर्वेद, भ्रूण हत्या जैसे विषयों को विषय वस्तु बनाया है स्वप्न और शकुल विचार आपकी पाँचवी कृति है जिसमें आपने स्वप्नों और शकुलों को उनके फलों सहित काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत कर एक अभिनन्दनीय कृत्यकार जनमानस को एक उपयोगी कृति प्रदान की है।

इस कृति में लेखक (रचनाकार) चंसौलिया ने बड़ाश्रम किया है। कृति की रचना के पूर्व कृतिकार ने अनेक विद्वानों की कृतियों का विशद अध्ययन कर विषय को सरस और हृदयंगम बनाने की पूरी कोशिश की है। कृतियों में कृतिकार ने सर्वप्रथम स्वप्न और तत्सम्बन्धी फलों तथा इसके उपरान्त शकुल और उनके फलों को रखा है। वास्तव में कृति अपने आप में एक अनूठी कृति बल पड़ी है। इस कृति की सबसे बड़ी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विशेषता तो ये है कि इसमें जिस विषय वस्तु को स्थान दिया गया है। उसे दोहा जैसे लोकप्रिय छन्द में प्रस्तुत किया गया है जिसे पाठकगण बड़ी सहजता के साथ आत्मसात कर सकते हैं।(4)

कृति के परिचय के पश्चात थोड़ा आलोक स्वप्न अवस्था पर डाल दिया जाए ताकि हमारे पाठकगण इस विषय से भली-भाँति परिचित हो सकें। स्वप्न मनुष्य के निद्राग्रस्त विषयानुभव का नाम है। निद्रा में स्वप्नों का होना स्वाभाविक है। मनुष्य अपने विचारों पर जाग्रत अवस्था में नियंत्रण रखले में समर्थ रहता है किन्तु वह स्वप्नों को अपनी इच्छा के अनुसार देखने में असमर्थ रहता है। शयलावस्था मस्तिष्क की गतिविधि किसी निर्देशन या नियंत्रण के बिना भी गुप्त रूप से चलती रहती है। स्वप्न में व्यक्ति प्रायः ऐसी स्थितियों तक चला जाता है। जिनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

मनुष्य जिन स्वप्नों को देखता है वे इतने सजीव होते हैं कि मानस पटल पर उनका चित्र अमिट रूप से अंकित हो जाता है। ड0 धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित हिन्दी साहित्य कोष में स्वप्नावस्था पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस ग्रंथ के अनुसार स्वप्न एक मानसिक अवस्था है जो निन्द्राग्रस्त होने पर ही घटित होती है। स्वप्नों के दो पक्ष होते हैं प्रकट अन्तर्वस्तु और अन्तर्वस्तु प्रकट अन्तर्वस्तु के अन्तर्गत वे समस्त मालस प्रतिभाएँ निकलतीं हैं। जिनसे दिखाई देने वाले स्वप्नों का निर्माण होता है। अन्तर्वस्तु में वे वित्तार इच्छाएँ और प्रेरणाएँ होती हैं, जिनको स्वप्न प्रच्छन्न रूप से व्यक्त करता है। स्वप्न की प्रक्रिया द्वारा गुप्त अन्तर्वस्तु प्रकट अर्न्तवस्तु के रूप में परिणित हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक स्वप्न इच्छा पूर्ति का साधन होता है।

(र) पारिवारिक परिवेश

(ल) साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्धता एवं सम्मान / पुरस्कार / गोष्ठियाँ आदि

- महिमा साहित्य भूषण सम्मान महिमा प्रकाशन दुर्ग (छ.ग.)
- भरान्ति अलंकार साहित्य मंच कुम्हारी (छ.ग.)
- महिमा साहित्य मणि सम्मान महिना प्रकाशल गयालगर दुर्ग (छ.ग.)
- घरा कबीर सम्मान एवं साहित्य अलंकरण साहित्य मंच कुम्हारी दुर्ग (छ.ग.)
- काव्य रत्नाकर सम्मान राष्ट्रीय चिंतन साहित्य समित टीकमगढ़ (म.प्र.)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- श्री राम कृष्ण कला साहित्य सम्मान इन्द्रधनुष साहित्य संस्था धामपुर • कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर सारस्वत साहित्य सम्मान भारतीय वायू अलीपुर बंगाल
- बुंदेलीरत्न सम्मान अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद उरई जालौन (उ.प्र.)
- न्यू ऋतंभरा तुलसी दास सम्मान न्यू ऋतंभरा साहित्य मंच कुम्हारी, दुर्ग (छ.ग.)
- काव्य रत्नाकर सम्मान चकरपुर जिला छतरपुर (म.प्र.)
- कबीरदास सम्मान कुम्हारी जिला-दुर्ग (छ.ग.)
- साहित्य के सितारे सम्मान कुम्हारी जिला-दुर्ग (छ.ग.)
- सूरदास सम्मान ऋतंभरा साहित्य मंच (छ.ग.)
- ज्योतिष रत्नाकर सम्मान परियावां जिला प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
- रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्य सम्मान जिला दुर्ग (छ.ग.) 16. साहित्य शिरोमणि सारस्वत सम्मान भारतीय वाङ्गमय पीठ कोलकाता
- पं. कामता प्रसाद गुरु सारस्वत सम्मान भारतीय वाङ्गमय पीठ कोलकाता
- ज्योतिष मार्तण्ड सारस्वत सम्मान भारतीय वाङ्णमय पीठ कोलकाता
- साहित्याचार्य अलंकरण परियावां, जिला प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
- रज्जन सम्मान, राजेन्द्र रज्नल साहित्यिक समिति, डबरा, जिला ग्वालियर (म.प्र.)
- ज्योतिष शिरोमणि मानसेवी उपाधि विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ, गान्धी नगर, ईशापुर, भागलपुर, बिहार

(ख) कृतित्व एवं साहित्यिक व्यक्तित्व-

समाज जीवन के विकास के साथ लये पुराने विचार, प्रथा, पद्धतियों में टकराहट निर्माण होती है. इसी से सामाजिक समस्याओं का निर्माण होता है। अर्थात् विकास का प्रवाह किसी रुकावट के कारण बाधित होता है तभी समस्या निर्माण होती है। मालय समाज में सामंतवादी समाज व्यवस्था पर पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के आक्रमण ने सामान्य जनता की रीढ़ ही तोड़ दी। अंग्रेजों के आगमन के बाद नये विचार और नयी संस्कृति ने भारत की सम्पूर्ण समाज व्यवस्था को जड़ से हिला दिया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ सूची

1. **चंसौलिया महावीर प्रसाद**, **रामचरितमानसः एक नई दृष्टि जलता ऑफसेट प्रिंटर्स**, **ग्वालियर संस्करण प्रथम**, **पृ.** 24
2. **चंसौलिया महावीर प्रसाद**, **महावीर ज्योतिष दोहावली**, **ग्वालियर साहित्य अकादमी ग्वालियर संस्करण प्रथम**, **पृ. भूमिका**
3. **चंसौलिया महावीर प्रसाद**, **महावीर दोहा मुक्तक- मंजरी**, **ग्वालियर साहित्य अकादमी व्यालियर संस्करण** 2010. **पृ.** 7
4. **चंसौलिया महावीर प्रसाद**, **महावीर दोहा मुक्तक- मंजरी**, **ग्वालियर साहित्य अकादमी ग्वालियर संस्करण** 2010. **पृ.** 14

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गढ़वाल की संस्कृति में जागर अथवा देव गाथाओं की सामाजिक प्रासंगिकता

सुप्रिया सक्सेना
शोध-छात्रा,संगीत विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date
05/03/2025
Paper date Publishing Date
10/03/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15059309

IMPACT FACTOR
5.924

शोध- प्रपत्र

गढ़वाल की धरती नृत्यमयी है। यहां के वातावरण में अनोखी रागात्मकता है। प्रकृति के अंग- उपांग नदी - झरने - पशु-पक्षी, नाना प्रकार के पुष्प यहां के लोक में एक आनंदमयी रासधारा घोल देते हैं। देवता भी यहां आते हैं तो नृत्य किए बिना नहीं रहते हैं। इसलिए तो इस केदारखंड को देवभूमि कहा गया है। यहां के दिव्य वातावरण एवं नैसर्गिक सौंदर्य पर दुनिया मुग्ध हो जाती है।

मनुष्य के यहां देवी - देवताओं के साथ मानवेतर संबंध प्रतीत नहीं होते हैं। वह रुष्ट होने पर देवताओं को विशेष आह्वान-अर्चन कर मानवलोक में निमंत्रित करता है और उनकी नृत्यमयी उपासाना कर उन्हें सम्मान, भेंट (द्रव्य) के साथ विदा करता है। देवी-देवताओं के इस संगीतमयी आह्वान - नर्तन को ही जागर कहा जाता है।

सामान्यतः अनुष्ठान विशेष में किसी देवी-देवता को आह्वान और विरुद गाकर अवतरित करने की प्रक्रिया जागर कहलाती है। इस अनुष्ठान अथवा प्रक्रिया में गाए जाने वाले आख्यान को जागर गाथा कहा जाता है । इन्हें धार्मिक गाथा भी कहा जाता है। गाथा गायन के साथ ढोल दमाऊं, कांस की थाली और भंकोरा आदि पर्वतीय वाद्य यंत्रों का वादन होता है । दूसरे शब्दों में किसी अलौकिक शक्ति को मानव माध्यम पर अवतरित करने को उसे जगाना कहा जाता है। गढ़वाल में इसे ही जागर शब्द का मूल माना जाता है। (1)

जागर शुद्ध संस्कृत शब्द है, जो जागृ के साथ घल् प्रत्यय लगाकर बना है । उसका अर्थ होता है-जागरण । कालिदास के रघुवंश और महाभारत के जागर पर्व प्रसंग में जागर शब्द का उल्लेख आया है। रात्रि में जागरण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कर अथवा किसी माध्यम पर देवी शक्ति के आह्वान अवतरण और नृत्यमयी पूजा के लिए किए गए अनुष्ठान तथा गीतों को जागर कहा जाता है।

भारतीय नाट्य शास्त्र में यह विश्वास प्रकट किया गया है कि नृत्य से देवता प्रसन्न होते है। संभवतया सभी परंपरा के अनुरूप पहाड़ों में भी अभीष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट निवारण के लिए देवता नचाने की प्रथा है।(2)

स्थानीय बोली में देवगाथाएं, देवताओं के जागर या वार्ता हैं। जागर स्तुति गीत हैं, जिनमें देवताओं के अवर्णनीय गुण, शौर्य, वीर्य, पौरुष और अद्भुत शक्तियों का गान किया जाता है। जनपदीय परंपरा के ये जागर असुप्त अवस्था के प्रतीक हैं। इनका गान देव विशेष का आह्वान है। स्थानीय देव जिनमें प्रमुख नागराजा, नर सिंह, हत्या, आछरी, भैरों, नगेला, निरंकार प्रमुख हैं, सबके अपने आह्वान गीत हैं। इन देवों का अपना विशेष महत्व जनपदीय जीवन में है।

जागर का अर्थ है मंगला मंगलकरण समर्थ दैवी शक्ति को जाग्रत करना तथा उनके माध्यम / डंगरिया / प्श्वा में उनका अवतरण कराना अर्थात् कष्टों के निवारणार्थ उनका आह्वान करना ।

स्पष्ट है कि गढ़वाल में देवी-देवताओं की नृत्यमयी उपासना ही जागर कहलाती हैं। जागर आयोजित कराने का उद्देश्य देवता को प्रसन्न करना अथवा केई मनौती पूरी होने पर देवी-देवता का आभार व्यक्त करना है। आनुष्ठानिक और धर्म - भावना से संपृक्त होने के कारण इन गाथाओं के प्रति लोक का विशेष अनुराग होता है। प्रारंभ, मध्य और समापन तीन चरणों में आयोजित होने वाली जागर गाथाओं में देवता अवतरण की घटना महत्वपूर्ण होती है। देवता के साक्षात्कार और आशीर्वाद स्वरूप चावल (अक्षत - ज्यूंदाल) प्रदान करने से भक्तजन स्वयं को धन्य मानते हैं।

जागरों का प्रारंभ पवित्रीकरण, धूप-दीप के बाद 'जाग' और 'प्रकट' शब्दों के बार-बार संबोधन - उच्चारण से होता है। प्रारंभ में भंकोरा (तांबे के दो तुरहीनुमा यंत्र) घंटे, शंख आदि बजाकर मंत्रोच्चारण के साथ पुरोहित अथवा आवजी संबंधित देवता की विरुदावली कहता है। इसके पश्चात गाथा आरंभ होती है। जागर में वाद्य यंत्रों में या तो ढोल दमाऊं और या फिर कांस की थाली और डमरू ढोलक (घडियाला) प्रयोग में लाए जाते हैं। प्रारंभ में पवित्रीकरण के बाद प्रमुख तीर्थ स्थलों को जाग्रत करने के उद्देश्य से उनका नाम लिया जाता है-

हरि हरिद्वार जाग

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

धौली देवप्रयाग जाग / नौखंभा हिवाळा जाग

बदरी का बाड़ा जाग / केदार की कोंणी जाग

चौपड़ा चौथान जाग/ दैणी द्वारिका जाग

बार्यौं मथुरा जाग। (3)

इसके बाद गाथा आरंभ होकर लंबी चलती है। कभी-कभी तो अनवरत 2-3 घंटे तक । बीच में जब कभी किसी देवी-देवता की गाथा में संबंधित देवता का वर्णन पराक्रम, शौर्य, साहस और भक्त वत्सलता की प्रशंसा पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है तो वह देवता अवतरित हो जाता है। वैसे जागर गाथा आयोजन में देवता अवतरण का एक निश्चित समय एवं प्रक्रिया निर्धारित होती है। प्रायः गाथा आयोजन के दौरान निश्चित समय के अंतराल पर होने वाले यज्ञ के दौरान देवता अवतरित होते हैं ।

यह प्रक्रिया प्रत्येक प्रहर पर सम्पन्न होती है। इसे 'पहर आना' कहा जाता है। जागर गाथा आयोजन के संपूर्ण अनुष्ठान अथवा काल को हवन, जात, जातरा कहा जाता है। प्रायः यह आयोजन एक ही देवता के नाम से या निमित्त होता है, किन्तु उसके साथ अन्य देवी-देवता भी अवतरित होते हैं। वे प्रायः मुख्य देवता के क्षेत्र या रक्त संबंधी होते हैं।

देवता अवतरण प्रायः हल्के कंपन से आरंभ होता है । पश्वा पर जब यह कंपन पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है तो वह हवाऽऽऽऽ की ओजस्वी ध्वनि के साथ हाथ फैलाते हुए नृत्य करने लगता है । प्रतीत होता है कि उक्त पवा के शरीर में तीन-चार गुनी शक्ति समाहित हो गई है। उसके मुख पर अनोखा तेज - ओज प्रकट होने लगता है। अवतरित देवता पश्वा के माध्यम से अपनी विरुदावली कहते हुए और प्रशंसा में कुछ वाक्य गान करते हुए भक्तों पर चावल फेंकता है और भक्तों को अनिष्ट शक्तियों से मुक्ति दिलाता है। पश्वा पर यह देवता किस रूप में कैसा आता है और इसमें कितनी शक्ति एवं सचाई है, यह तो शोध का विषय है, किन्तु इस प्रक्रिया पर लोक की अगाध आस्था अडिग है ।

लोक में अनेक लोगों के मुख से अभी भी ऐसे देवताओं के किए चमत्कार सुनने को मिलते हैं। गढ़वाली समाज में वर्तमान में भी व्याप्त देव अवतरण की इस परंपरा पर कहा जा सकता है कि यहां के लोक का ब्रह्मांड

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अथवा स्वर्ग लोक में व्याप्त किसी शक्ति पर परम विश्वास है और उसने उसके साथ मानवीय संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है ।

जागर की कथावस्तु संबंधित देवता के अवतरण, जीवन से जुड़ी घटनाएं और उसके परोपकारी कृतित्व होती है। पूरी गाथा एक ही देवता के यशगान पर केंद्रित रहती है। कभी-कभी एक जागर गाथा में अन्य देवी-देवताओं की सहगाथाएं भी चलती हैं, किंतु ये देवी-देवता उस मुख्य देवता से ही जुड़े होते हैं। जैसे नागराजा (श्रीकृष्ण) की गाथाओं में रमोला, ब्रह्मकौल की गाथाएं भी आती हैं। श्रीकृष्ण का संबंध रमोलीगढ़ से होना बताया जाता है और रमोला रमोलीगढ़ का स्वामी (शासक) था ।

इसी प्रकार घडियाल (घंटाकर्ण) की गाथा के साथ पांडवों की गाथा भी चलती है। घडियाल को अभिमन्यु का अवतार माना गया है। इसी प्रकार कृ ष्णावतारी नृसिंह की गाथा के साथ श्रीकृष्ण की भी गाथा जुड़ी है। जागर गाथाओं में आनुष्ठानिक प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। यह सब वैदिक परंपरा और ज्योतिषीय आधार पर होता है। प्रत्येक प्रहर पर जौ तिल, घी आदि का हवन एवं अंत के दिन पूर्णाहुति होती है। जागरों की अंतिम पूजा दक्षिण और वाम मार्गी दोनों होती हैं। (4)

देवी के जागरों में बकरी - बकरे की बलि दी जाती है। कई वर्ष पहले टिहरी के लोस्तु स्थित घंडियालधार मंदिर में भी बकरियों की बलि दी जाती थी, किन्तु अब यह प्रथा बंद हो चुकी है। नंदा राजजात के समय भी पहले बलि दी जाती थी, लेकिन अब वहां भी यह परंपरा इतिहास बन चुकी है। इस संबंध में प्रो. डी. डी. शर्मा लिखते है कि पौराणिक देवताओं में दुर्गा एवं कालिंका को छोड़कर और कोई भी नहीं जो कि पूजा में बलि ग्रहण करता हो, जबकि लोक देवताओं में अधिकांश ऐसे हैं जो या तो स्वयं या अपने गणों के लिए अवश्य बलि चाहते हैं ।

जागरों अथवा जात की यह प्रक्रिया यह प्रक्रिया विषम संख्या के दिनों (1-3-5-7-9) की होती है। अंतिम दिन स्यूंरता होता है। अंतिम रात्रि महत्वपूर्ण होती है। इस पूरी रात्रि को जागर गाथाएं गायन की परंपरा है । इस रात्रि का भी चौथा प्रहर महत्वपूर्ण होता है। इस समय लोक के लगभग सभी देवी-देवता अवतरित होते हैं। इसका कारण ब्रह्म मुहूर्त होना माना जा सकता है। योग विशेषज्ञों के अनुसार ब्रहमांड वातावरण में इस समय स्वस्थ शक्तिमान वायु होती है और दिव्य शक्तियां पृथ्वी लोक में ग्रहण की जा सकती हैं। (5)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जागरों में इस चौथे प्रहर में पहाड़ी वाद्य यंत्रों के वादन के बीच देवताओं का अवतरण और उनके यशोगान की ध्वनियां एक अनोखे दिव्य वातावरण की अभिसृष्टि करती हैं। जागरों की प्रक्रिया के समय शाम 4 **बजे के प्रहर में संबंधित देवता का पश्वा दूध और जल का स्नान करता है। यह प्रक्रिया देव अवतरण के समय की है। नागराजा, घंटाकर्ण और नगेलो की जातों में यह परंपरा निभाई जाती है ।**

स्नान के पश्चात श्वा भक्तों के माथे पर गीली हल्दी एवं अक्षत लगाता है। इसमें पश्वा अनामिका, मध्यमा और तर्जनी अर्थात् दायें हाथ की मध्य की तीन उंगलियों का प्रयोग करता है। त्रिपुंड रूप में लगाए जाने वाला यह टीका गढ़वाल में शैव संप्रदाय की बद्ध भक्ति का द्योतक है। इन देवताओं के लिंग के रूप में पूजन भी यही पुष्ट करता है। मात्र पुरुष भक्तों के ही माथे पर टीका लगाए जाने से प्रतीत होते हैं कि प्राचीन गढ़वाली समाज में स्त्री को आज की तरह सामाजिक सहभागिता एवं स्वतंत्रता का अधिकार नहीं था ।

शारीरिक अपवित्रता की आशंका भी इस परंपरा के मूल में ही हो सकती है। इन अनुष्ठानों में देवताओं के प्रतीक के रूप में लिंग, निशा (लंबी छड़ी पर रंगीन वस्त्र और शिखर पर छत्र) की पूजा की जाती है। नैलचामी, लस्या, ग्यारह गांव, हिंदाव में नग्रेला, महेंद्र देवता, देवी, जगदी की डोलियां नचाने की भी परंपरा है। बताते हैं कि डोली वाहक भक्तों को चलने का दिशा-निर्देश संबंधित देवी-देवता ही करते हैं। जागर गाथा का अंतिम चरण देवताओं की विदाई वाला होता है। अर्थात् इस समय देवता मानव देह से उतरने लगते हैं।

संदर्भ सूची

1. **वीरेन्द्र बर्त्वाल, पंचशील शोध समीक्षा, संस्करण** 2010, **पृ.** 72.
2. **वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण** 2014, **पृ.** 56.
3. **वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण** 2014, **पृ.** 55.
4. **वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण** 2014, **पृ.** 85.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

5. **वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण** 2014, **पृ.** 59.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गढ़वाली गाथाओं का समाज पर प्रभाव

सुप्रिया सक्सेना
शोध-छात्रा,संगीत विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
(म.प्र.)

Paper Rcevied date
05/03/2025
Paper date Publishing Date
10/03/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15059475

IMPACT FACTOR
5.924

शोध- प्रपत्र

समाज मनुष्य के एक-दूसरे के साथ संबंधों का ताना-बाना है। यह हमारे पारस्परिक व्यवहारों का जाल है। समाज हमारी व्यावहारिक दुनिया है । समाज के बिना मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाज मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण और समाज के लिए मनुष्य महत्वपूर्ण है। समाज के अंतर्ग मनुष्य का व्यवहार, रहन-सहन, पारस्परिक संबंध, वेश-भूषा के साथ ही पारिवारिक एवं जाति व्यवस्था आती है। सारांश यह है कि मनुष्य एक-दूसरे के प्रति व्यावहारिक संबद्धता ही समाज है । यह रक्त व अन्य संबंधों का पटल है ।

समाज पर मनुष्य की निर्भरता के कारण ही मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा गया है। मनुष्य समाज को प्रभावित करता है तथा समाज उसको प्रभावित करता है। इसी प्रकार लोकसाहित्य समाज को प्रभावित करता है तो लोकसाहित्य पर भी समाज का प्रतिबिंबन होता है। इसीलिए साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। समाज में व्याप्त रूढ़ियां, प्रथाएं, लोकविश्वास, भावनाएं, परंपराएं आदि साहित्य में प्रकट होती हैं। (1)

गढ़वाली लोकगाथाओं पर भी यही सिद्धांत लागू होता है। इनमें प्राचीन एवं मध्यकालीन गढ़वाली समाज की स्पष्ट झलक है। इनमें एक ओर तत्कालीन मानव की धर्म भावना, नैतिकता अलौकिक शक्ति के प्रति निष्ठा, वीरता, बलिदान, प्रेम, उदारता वचनबद्धता, सत्य, करुणा जैस मानवी भावों की व्यंजना हुई है, वहीं ईर्ष्या, द्वेष, कलह, प्रपंच, अन्याय, अत्याचार, झूठ, घृणा, अस्पृश्यता जैसी बुराइयों का भी प्रकटन हुआ है। इतिहास के साथ ही समाज को भी स्पष्ट रूप से रेखांकित करती इन गाथाओं के संबंध में ये पक्तियां उपयुक्त प्रतीत होती हैं।

इतिहास और कल्पना का मणिकांचन संयोग, शब्दों का जादुई चमत्कार और शैली का आकर्षण लोकगाथाओं को भूलने नहीं देता। मनोरंजन के साथ-साथ ये गाथाएं समाज की दिशा-निर्देशन और बोध की प्रदायक भी हैं। इनकी रचना का आधार सामाजिक पक्ष है। इनमें समाज का सच्चा पक्ष है। अभिव्यक्ति का आधार वैसा ही है, जैसा अभिव्यक्तिकर्ता देखता है। इनकी संरचना में मनुष्य का समग्र जीवन है। ठीक ऐसे ही, जैसे यदि तुम मेरे जीवन की सच्ची कहानी जानना चाहते हो तो मेरे गीत - गाथाओं को सुनो। समाज का उच्च, शिष्ट, सभ्य एवं संस्कृत रूप है इनमें प्रेम की अलौकिक दिव्य धारा है तो दूसरी ओर परस्पर कलह, द्वेष, विरोध और रीति-रिवाज, आचार-विचार, खान-पान, वेश-भूषा और रहन-सहन इन गाथाओं का आधार है।

गढ़वाली जागर गाथाएं पौराणिक होने के कारण उनमें धर्म तत्त्व समाहित हैं। उनमें देवी देवताओं का लीलागान है। कृष्ण पांडव की गाथाओं में अलौकिकता के साथ ही लौकिकता भी है। निरंकार की गाथा में विचित्र अवधारणा मिलती है। इसका देवता निरंकार - निर्विकार होते हुए भी अवतरित होता है। इसमें समाज में साम्यभाव की परिकल्पना को बल मिला है। पवाड़े गढ़वाल के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन का चित्रांकन करते हैं। जिसकी शक्ति, उसका सिंहासन' के सिद्धांत को महत्व प्रदान करते पवाड़ों में मानव हृदय के दुर्बल पक्ष हिंसा, द्वेष, ईर्ष्या आदि का रेखांकन हुआ है।

इस संबंध में चातक ने लिखा है- पवाड़े मुख्य रूप में सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसका कारण यह है कि उनका आधार ऐतिहासिक है। काल तथा स्थान की सीमाओं के बीच भी उनमें सत्य का अंश आज भी लुप्त नहीं हुआ है। इससे स्पष्ट है कि वे कल्पना की अपेक्षा वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित हैं। यही कारण है कि वे अपने युग का सही चित्र प्रस्तुत करते हैं। उस युग की कूटनीति, छल-छद्म तथा राग-द्वेष पूर्ण शौर्य की जैसी अभिव्यक्ति पवाड़ों में हुई है, वह काल्पनिक अथवा लोक काव्यगत नहीं है। वस्तुतः उसकी वास्तविकता युग की राजनीति में समाहित है। (2)

जैसा कि कहा गया है कि लोकसाहित्य तत्कालीन परिस्थितियों का प्रस्तोता तथा संवाहक होता है, इस आलोक में पवाड़ों की बात करें तो उनमें मध्यकालीन गढ़वाली समाज और राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त पराक्रम आधारित विजय का बखान है। सुंदरी सत्ता के लिए होने वाले रक्तपात की घटनाएं इनके विषय हैं। तत्कालीन राजनीतिक महत्वकांक्षा इतनी प्रबल थी कि मनुष्य (राजा, सामंत, भड़, योद्धा) सत्ता को प्राप्त करने के लिए नैतिक मूल्यों

का ध्यान भी भूल जाता था। सुंदरियों को प्राप्त करने के मार्ग में प्राण चले जाएं तो बड़ी बात नहीं । परंपराओं का अनुसरण करने की सीख देते हुए पवाड़े कहते हैं कि पुत्र को पिता जैसा साहसी बनना ही पड़ेगा ।

अहंकार, ईर्ष्या, अवसरवादिता और षडयंत्र तत्कालीन राजनीति में साधारण बात थी। विजित शत्रु को छिपकर मारना और अपने हित के लिए दूसरे का अहित करना जैसे प्रसंग अधर्म और अनैतिकता के तत्कालीन विकृत स्वरूप को व्यक्त करते हैं। पवाड़ों-प्रेमगाथाओं में प्रेम का प्रबल प्रकटीकरण है, किंतु काम की धार कद है।

प्रेम और काम का घनिष्ठ पारस्परिक संबंध है, किंतु गाथाओं में प्रेम को ही प्रमुखता मिली है, काम को नहीं । प्रेम की परिणति विवाह तक सीमित है। इसका अर्थ लगाया जाना चाहिए कि गाथाकारों ने गढ़वाली समाज की मर्यादाओं के दृष्टिगत प्रेम के आगे यह सीमा रेखा खींची है।

विस्तृत रूप से देखने पर गढ़वाली लोकगाथाओं में निम्नवत् रूप में यहां के सामाजिक स्वरूप के दर्शन होते हैं-

सती प्रथाः भारतीय समाज में लंबे समय तक सती प्रथा प्रचलित रही है । गढ़वाल पहले शिक्षा का प्रचार कम होने के कारण यहां भी यह कुप्रथा रही। पति की मृत्यु होने के उपरांत कई स्त्रियां पति की चिता में ही भस्म हो जाती थीं। इसके पीछे एक कारण विधवा स्त्री को हेय दृष्टि से देखना और दूसरा कारण लोक में यह विश्वास व्याप्त होना था कि स्त्री का पति उसका परमेश्वर है, उसका सतीत्व पति की मृत्यु के बाद नष्ट नहीं हो पाएगा। विश्वास था कि सुहागिन स्त्री पति की चिता में भस्म हो जाए तो दूसरे जन्म में भी वे पति-पत्नी ही बनेंगे। नारी अपने पतिव्रत धर्म को प्रमाणित करने के लिए भी समाज की इस अमानवीय कष्टजनक प्रथा का पालन करती थी।(3)

गढ़वाली लोकगाथाओं में स्त्री के सती होने के कतिपय प्रसंग आते हैं। कई बार तो स्त्री दो पुरुषों के साथ सती होती दिखाई देती है। नायक शत्रुओं के हाथों मारा जाता है तो नायिका उसकी चिता में भस्म हो जाती है। इस प्रकार के प्रसंग दर्शाते हैं कि तत्कालीन नारियों का चरित्र श्रेष्ठ था और वे अपने पति के प्रति सामाजिक अवधारणा के अनुकूल समर्पित थीं ।

रौत की गाथा के अंत में गाथा की नायिका स्यूंसला अपने मंगेतर रणू के साथ ही रणू के मामा के बेटे झंक्रू के शव के साथ सती हो जाती है। इन दोनों को मेघू कलूणी ने मार डाला था -

लगाये द्वी मालू को एक बोज

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रवि छाला वैन ऊंकी चिता रंचे

देखदी रै हेरदी पैली स्यूंसला

फेर छट उछले चिता चढ़ी गये

द्वी माल का बीच वा सती होई गये । ।(4)

कालू भंडारी के मारे जाने पर उसकी प्रेयसी ध्यानमाला कालू के साथ ही अपने पति की चिता में भस्म हो गई थी। यह पवाड़ा भी रणू-झंक्रू के पवाड़े की तरह ही दुखांत है। इसी प्रकार दिल्ली तख्त से गंगोली भाला लेकर आ रहे रिखोला के मारे जाने पर उसकी पत्नी मंगला ज्योति अपने पति की चिता में भस्म हो गई थी। रिखोला गढ़वाल के राजा मानशाह के मुसद्दियों के षड्यंत्र का शिकार हो गया था ।

बाल- विवाह: गढ़वाल में कुछ ही शताब्दी पहले तक अनेक क्षेत्रों में बाल-विवाह प्रथा प्रचलित रही है। कुछ लोग तो गर्भस्थ शिशुओं की तक मंगनी कर देते थे। इस प्रथा को पेट पिठें' कहा जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि तब रिश्तों के निर्धारण में आज की तरह लड़के-लड़की की शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय, सौंदर्य, रुचि को आधार नहीं बनाया जाता था। केवल जाति, खानदान, कुल-वंश, क्षेत्र, खेती और लड़की लड़के के माता-पिताओं के आपसी संबंध तथा परंपराएं ही वैवाहिक संबंधों के आधार थे।

गढ़वाली लोकगाथाओं में पेट में ही रिश्ते तय करने का सुंदर उदाहरण मालू- राजुला का पवाड़ा है।

रंगीली वैराट के राजा दोलाशाह की 80 वर्ष की अवस्था में संतान हुई। उसका नाम मालूशाह रखा गया। उसके ग्रह प्रतिकूल होने के कारण ब्राहमणों ने उसकी शीघ्र मंगनी करने का उपाय बताया । इस पर सौक्यानी - शौक्यानी देश का राजा सोनूशाह (सुनपति) के घर जन्मी कन्या राजुला से उसकी मंगनी कर दी गई। इसी प्रकार हरिश्चंद्र की गाथा में एक प्रसंग है। विवाह के कई वर्षों के बाद हरिश्चंद्र को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई । उसके भी विपरीत ग्रह-नक्षत्र (अठ्प) होने के कारण उसका विवाह चंद्रागढ़ के राजा शिशुपाल की पुत्री चंद्रावती से कर दिया गया। जब वह पांच दिन (पंचोला) का था, उसी दिन उसका विवाह कर लिया गया ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रेम विवाहः प्रेम गुण, रूप, स्वभावादि के कारण उत्पन्न होने वाला वह आकर्षण एवं सुखद मनोभाव है, जिससे प्रभावित होकर एक व्यक्ति दूसरे को सदा अपने साथ या निकट और प्रसन्न रखना चाहता है। प्यार, मुहब्बत, अनुराग, कृपा, क्रीड़ा, केलि, आनंद, मजाक, वायु, इंद्र, माया और लोभ ये सब प्रेम के ही अर्थ या पर्याय हैं।(5)

प्रेम दो हृदयों - आत्माओं के पारस्परिक संबंधों का द्योतक है। गढ़वाली लोक में स्त्री-पुरुष, युवक-युवती, पति-पत्नी, किशोर-किशोरी, जीजा-साली, देवर-भाभी के श्रृंगार रस युक्त मधुर संबंधों की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्द 'माया' प्रचलित है। दो हृदयों के मध्य उत्पन्न अनुरागमयी यह अभिव्यक्ति गाथाओं में यत्र-तत्र प्रस्फुटित हुई है। प्राचीन और मध्यकालीन गढ़वाल में सत्ता विस्तार और सुरक्षा के साथ ही माया भी रक्तपात का कारण बनी है।

अपने प्रेम को सदा के लिए अपना लेने की प्रवृत्ति हर प्रेमी के मन में रहती है। यही स्वभाव गाथाओं में झलक आया है। कोई कन्या अपने प्रेम के पति इतनी कटिबद्ध और समर्पित हो जाती है कि वह अपने जन्मदाता पिता के आदेश - अनुनय-विनय को भी ठुकरा देती है। पिता विवाह संस्कार के महत्वपूर्ण संस्कार सप्तपदी में तक अपनी पुत्री से आग्रह करता है कि जिस गांव में तूने विवाह करने की ठानी है, वहां विवाह न कर, किंतु पुत्री इसका प्रतिकार करते हुए अपनी इच्छानुसार विवाह कर लेती है।

सरू की गाथा का यही कथानक प्रसंग है। सरू को क्वीली के सजवाणों की सुंदरता उनकी धोती-टोपी पहनने का तरीका आदि सब ऐसा भाया कि उसने वहीं के पुरुष से विवाह करने का संकल्प ले लिया। उसके पिता ने सजवाणों के कई अवगुण गिनाए, लेकिन सरु नहीं मानी ।

गदू सुमरियाल ने भी सरू कुर्मैण से प्रेम विवाह ही रचाया था। वह जब वन में बांसुरी बजाया करता था तो सरू कुर्मैण उस पर मुग्ध हो गई थी। रिखोला लोदी ने भी सिरमौर के राजा मौलिचंद की पुत्री मंगला ज्योति से प्रेम विवाह किया था।

रुक्मा पर वैकां मन लग्यो चित्त

ऐ जाणो रुक्मा मेरा मलेथा बोद वो,

तब स्या कना बैन बोदे करड़ाः

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तेरा मलेथा होलो कोदो झंगोरो ।

कोदो झंगोरो खाण मैन वख नी औण ।

टिहरी गढ़वाल के कीर्तिनगर के निकट मलेथा की सुरंग या कूल (गूल) तो माधो सिंह और रुक्मा के प्रेम की प्रतीक मानी जाती है। यह उनके प्रेम की मधुर स्मृति है। माधो सिंह की गाथा में वर्णन है कि माधो सिंह का रुक्मा नामक युवती से बहुत प्रेम था। माधो ने उसके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा तो रुक्मा ने माधो सिंह से विवाह करने से इसलिए मना कर दिया कि मलेथा गांव में पानी नहीं था। वहां की जमीन ऊसर थी । इसलिए रुक्मा ने कहा कि हे माधो!

तेरे गांव मलेथा में पानी नहीं होने के कारण वहां धान नहीं, मात्र कोदा - झंगोरा ही उगता है, अतः इस मोटे अनाज को खाने मैं वहां नहीं आऊंगी। पीने के पानी के लिए भी सुबह - सुबह पानी का बंठा अलकनंदा नदी से लाना पड़ेगा । इसलिए तुम ही उस बंजर गांव में रहना और मेरे साथ विवाह की कल्पना त्याग देना । रुक्मा के इन शब्दों पर माधो ने संकल्प ले लिया था कि मैं किसी भी प्रकार से मलेथा गांव में पानी पहुंचाकर रहूंगा।

संदर्भ सूची

1. **वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण** 2014, **पृ.** 221
2. **वही, पृ.** 222
3. **वही, पृ.** 223
4. **वही, पृ.** 224
5. **वही, पृ.** 224

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

A CRITICAL STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND PSYCHOLOGICAL APPROACHES

Ritu Rathore
Department of education
Research scholar Jiwaji university, Gwalior M.P.

Paper Rcevied date
05/03/2025
Paper date Publishing Date
10/03/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15103183

IMPACT FACTOR
5.924

ABSTRACT

The concept of emotional intelligence is of unparalleled interest in both the popular literature and within academia. Much work is being done to discover exactly what emotional intelligence encompasses and how it would be most effectively applied. The present paper will attempt to review the literature surrounding emotional intelligence (E.I.). It shall study the construct of E.I. by reviewing the different models, the measures used to assess them, and the relationship between these models and other similar constructs. Further, it will review the applicability of the E.I. construct to applied academic settings and shall propose how future research in this area could be applied to various levels to enhance teacher effectiveness.

Keywords: Emotional intelligence, Constructs, Academic settings, Academic Discipline And Sub-Disciplines

INTRODUCTION:

The topic of emotional intelligence has witnessed unparalleled interest in both the popular literature and within academia. Programs designed to increase emotional intelligence have been implemented in numerous settings, and courses on developing one's emotional intelligence have been introduced in organisations, universities, schools and other institutions.. But the question arise, what exactly is emotional intelligence? As is the case with all other constructs (i.e. intelligence, leadership, personality etc.), several schools of thought exist which aim to accurately describe and measure the notion of emotional intelligence. At the most general level, emotional intelligence (E.I.) refers to the ability to recognize and regulate emotions in ourselves and others.

Thorndike, an influential psychologist in the areas of learning, education, and intelligence established that humans possess several types of intelligence, one type being called social intelligence, or the ability to understand and manage males and females, and to act wisely in human relations. Further David Wechsler, the originator of the Wechsler Adult Intelligence Scale (WAIS) intelligence tests, decsribed both non-intellective and intellective elements of intelligence. The non-intellective elements, which included affective, personal, and social factors, he later proposed were significant for predicting one's ability to succeed in life. Later in the century, Gardner's multiple intelligences. also mentioned the significance of emotional expression in organisation behavior. Emotional intelligence represents two of the seven intelligences categorized by Gardner Interpersonal and intrapersonal intelligences while other five intelligences include verbal intelligence, logical intelligence, visual intelligence, kinesthetic intelligence and musical intelligence. Gardner referred interpersonal intelligence as the ability to understand other people such as motivation of their behavior, working style and attitude while intrapersonal intelligence as the ability to set norm for oneself and use that in life.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

The research in field of emotional intelligence is dominated by three primary theorists including Bar-On, Mayer and Salovey and Daniel Goleman. Reuven Bar –On, a prominent researcher and originator of the term "emotion quotient" views emotional intelligence as being concerned with understanding oneself and others, relating to people, and adapting to and coping with the immediate surroundings to be more successful in dealing with environmental demands Salovey and Mayer termed emotional intelligence as “a subset of social intelligence seperable from general intelligence which entails the ability to monitor one’s own and others’ feelings and emotions, to discriminate among them and to use this information to guide one’s thinking and actions”. Later on they expanded their model and defined EI as the ability of an individual to perceive accurately ,evaluate and express emotion; the ability to access and/or generate feelings when they facilitate thought; the ability to understand emotion and emotional knowledge; and the ability to regulate emotions to promote emotional and intellectual growth

Daniel Goleman, a psychologist and science writer discovered the work of Salovey and Mayer in the Inspired by their findings, he began to conduct his own research in the area and eventually wrote Emotional Intelligence: Why It Can Matter More Than IQ. The landmark book which familiarized both the public and private sectors with the idea of emotional intelligence.Weinberger. provided a summary of the research work conducted in the area of emotion including emotional intelligence. His summary broke down the study of emotion from three disciplines; a) sociological domain; b) psychological domain and c) HRD. (See table 1) .The foundation of the study of emotional intelligence began in the early workings of the study of emotion and the study of intelligence. The initial research around the topic of emotion was in the sociological and psychological domains. Sociologically, the early researchers looked at such areas as emotional labor, emotional contagion ,feeling rules,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

emotion and rationality.Within the psychological realm, the areas of emotion and motivation, empathy and mood were researched.

2. **Historical Aspect of Emotional Intelligence**
   - 1930s – Edward Thorndike described the concept of "social intelligence" as the ability to get along with other people.
   - 1940s – David Wechsler suggested that affective components of intelligence may be essential to success in life.
   - 1950s – Humanistic psychologists such as Abraham Maslow described how people can build emotional strength.
   - 1975 - Howard Gardner publishes The Shattered Mind, which introduced the concept of multiple intelligences.
   - 1985 - Wayne Payne introduced the term emotional intelligence in his doctoral dissertation entitled "A study of emotion: developing emotional intelligence; self-integration; relating to fear, pain and desire (theory, structure of reality, problem-solving, contraction/ expansion, tuning in/coming out/letting go)."
   - 1987 – In an article published in Mensa Magazine, Keith Beasley used the term "emotional quotient." It has been suggested that this is the first published use of the term, although Reuven Bar-On claims to have used the term in an unpublished version of his graduate thesis.
   - 1990 – Psychologists Peter Salovey and John Mayer published their landmark article, "Emotional Intelligence," in the journal Imagination, Cognition, and Personality.
   - 1995 - The concept of emotional intelligence was popularized after publication of psychologist and New York Times science writer Daniel Goleman's book Emotional Intelligence: Why It Can Matter More Than IQ.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Table 1 : Study of Emotions from other disciplines

	SOCIOLOGICAL DOMAIN	PSYCHOLOGICAL DOMAIN	HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
Research Interests	Emotional Labor Hochshild (1979; 1983) Van Maanen and Kunda (1989) Rafaeli and Sutton (1987; 1990) Morris and Feldman (1996) Wharton (1993) Emotional Contagion Rafaeli and Sutton (1987) Hatfield, Cacioppo, and Rapson (1994) Verbeke (1997) Doherty (1998) Domagalski (1999) Feeling	Emotion and Motivation Pinder (1998) Empathy Mehrabian and Epstein (1972) Mood Mayer and Bremer (1985) Mayer and Gaschke (1988) Mayer, Mamberg, and Volarth (1988) George and Brief (1992) Affect and Mood Estrada, Isen and Young (1997) Weiss and Cropanzao (1996)	Various topics in emotion work Callahan Fabian (1999) Callahan and McCollum (2002) Turnball (2002) Short and Yorks (2002) Wells and Callahan (2002) Emotional Intelligence Jordan and Troth (2002) Bryant (2000) Weinberger (2002) Opengart

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

	rules/emotion of work setting Goffman (1969) Hochschild (1983)	Emotion Plutchik (1984) Mayer, DiPaolo, and Salovey (1990)	and Bierema (2002) Leeamornsiri and Schwindt (2002)

A description of the three prominent models of emotional intelligence are outlined to facilitate a more thorough understanding of the concept. The relationship between these different models will be examined, as will the relationship between emotional intelligence and other commonly related areas, namely personality, conflict handling, academic achievement, leadership and work performance. Next, a review of the research on emotional intelligence in everyday life and applied settings will be discussed. Finally, this paper will throw light on implications for future research and criticisms and controversies surrounding the construct of emotional intelligence.

- **Emotional intelligence and personality**

Numerous authors have evaluated the emotional intelligence construct with the personality dimensions (Higgs, 2001), Godse and Thingujam (2010), Ramo, Saris and Boyatzis (2009), Van Der Zee, Thijs, & Schakel, 2002. Also Bar-On and Goleman models of emotional intelligence are found closely associated with personality theory.Both models have components and sub-components of their theory of emotional intelligence which are similar to dimensions which have been previously studied under personality theory. Bar-On' sub-components of assertiveness, interpersonal effectiveness, empathy, impulse control, social responsibility, and reality testing have all been considered parts of personality inventories. For

example,Sjoberg (2001) devised a test battery for use in the selection process in and was broadly based on the notions of emotional intelligence and social competence. In this selection process, emotional intelligence contributed variance above and beyond the standard scales of personality. Likewise,the California Psychological Inventory (CPI) contains scales that include self-assurance, , self-acceptance, self-control, flexibility, empathy and interpersonal effectiveness. Also many Goleman's competencies, including empathy, self-control, and self- confidence have been extensively researched in personality psychology (Mayer, Salovey, & Caruso, 2000).

The overlap between components of emotional intelligence models and personality theory is especially evident in empirical comparisons of the constructs. Goleman's measure of emotional intelligence, the Emotional Competence Inventory, has been found to correlate significantly with three of the Big Five Personality factors: extroversion, conscientiousness and openness One study looked at the relationship between the Myers-Briggs type indicator (MBTI) and emotional intelligence (Higgs, 2001). The intuition aspect of MBTI was found to be significantly correlated with higher levels of emotional intelligence. Godse and Thingujam (2010), Ramo, Saris and Boyatzis (2009) also predicted a positive relationship bewteen Emotional intelligence and personality. Ramo, Saris and Boyatzis (2009) found that both social and emotional competencies and personality traits are valuable predictors of job performance. Also, competencies seemed to be more powerful predictors of performance than the personality traits. Others investigated the relationship of self and other ratings of emotional intelligence (Van Der Zee, Thijs, & Schakel, 2002) and concluded that the emotional intelligence dimensions were able to predict both academic and social success above traditional indicators of academic intelligence and personality.

- **Emotional Intelligence And Stress:**

Stress Is influenced by an individual's ability to manage and control their emo

tions in the workplace. Researches have been conducted to know whether emotional intelligence plays a prominent role in overcoming stress and stress related outcomes and it has been established that individuals who scored high in emotional quotient experienced better health and well-being, displayed better management performance and suffered less subjective stress and displayed better work performance. (Kauts and Saroj ,2010; Slaski and Cartwright,2002; Duran and Extremera ,2004 ;Darolia and Darolia, 2005; Chabungban,2005 ; Abraham, 2000 ;Spector and Goh,2001). Kauts and Saroj (2010) noticed emotional intelligence to be a factor useful in reducing occupational stress of teachers and enhancing their effectiveness in teaching. Chabungban (2005) proposed that by developing emotional intelligence one can bridge the gap between stress and better performance.In addition, it prevent negative emotions from swamping the ability to think, feel motivated and confident and to accurately perceive emotions, to empathise and get along well with others. Gohm, Corser and Dalsky (2005) proposed that emotional intelligence is potentially helpful in reducing stress for some individuals, but unnecessary or irrelevant for others which may be due to lack of confidence in their emotional ability. Ismail, Suh-Suh, Ajis and Dollah (2009) confirmed that the inclusion of emotional intelligence moderated the effect of occupational stress on job performance.

- **Emotional intelligence and conflict**

Ayoko, Callan and Hartel (2008) The suggested suggested that teams with less well-defined emotional intelligence climates were associated with increased task and relationship conflict and increased conflict intensity. Godse and Thingujam (2010), Srinivasan and George

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(2005), Jordan and Troth (2004) suggested different problems expect different styles of handling and emotionally intelligent individuals are capable of applying the different and better style of conflict management styles as the situation demands. Lenaghan, Buda and Eisner (2007) and Carmeli (2003) revealed that employees who score high in emotional intelligence are more able to balance work-family conflict as they recognize and manage feelings of conflict as they occur.

Emotional Intelligence and Prominence

C. L. Rice (1999) used an early ability model of emotional intelligence developed by Mayer and Salovey to evaluate the effectiveness of teams and their leaders and suggested that emotional intelligence plays a role in effective team leadership and team performance. Kamran(2010) investigated whether Emotionally intelligent leadership (EIL) could influence the faculty effectiveness and identificatified 10 components of EIL which serve to improve the effectiveness of the faculty members viz. self leadership, moral, trust, conscientiousness, flexibility, participation, empowerment, capacity building, communication and motivation. Michael A. Trabun (2002), Sitter (2004) and Suhaila and Zahra (2013) noticed revealed the significant and positive relationship between leadership styles and emotional intelligence. Barling, Slater and Kelloway (2000), Mandell and Pherwani (2003), Webb (2004), Srivastva and Bharamanaikar (2004) analysed the predictive positive relationship of emotional intelligence with transformational leadership style. Boyatzis and Ratti (2009) in their study identified competencies that differentiated effective managers and leaders. Results suggested that emotional, social and cognitive intelligence competencies predict performance.

CONCLUSION:

The History of emotional intelligence, various generalisations of emotional intelligence theories most notably of Mayer and Salovey, Daniel Goleman, and Baron have been discussed in the paper. The literature predicted a significant relationship between emotional intelligence and other variables like personality, leadership, teacher effectiveness, academic achievement, conflict handling, stress etc. The role of emotional intelligence in academic settings and provided recommendations for the future scope for the research in the field of emotional intelligence to the researchers and educators

REFERENCES:

1. Abdullah, M.C., Elias, H., Mahyuddin, R., & Uli, J. Human Resource Management Papers, Islamabad: National Institute of Psychology (2004).
2. Abraham, R. (2000) The Journal of Psychology, 184.
3. Alhashmei, E. Sushaila., & Hajee, R. Zahra. (2013).: A case study in Bahrain. Prabhandan : Indian journal of management, 32.
4. Ashforth, B.E., & Humphrey, R.H. (1995). Emotion in the workplace: A reappraisal. Human Relations, 125.
5. Ayoko, O. B., Callan, V. J., & Hartel, C. E. J. (2008). The Influence of Team Emotional Climate on Conflict 149.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

A STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND DEFENCE MECHANISM

Ritu Rathore

Department of education

Research scholar Jiwaji university, Gwalior M.P.

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15103231

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

Emotional Intelligence has been an important and interested topic during the last few years. Emotional Intelligence (EI) must somehow combine two of the three states of mind cognition and affect, or intelligence and emotion. A number of testing instruments have been developed to measure emotional intelligence, although the content and approach of each test varies. Emotional Intelligence allows us to think more creatively and to use our emotions to solve problems. Emotional Intelligence probably overlaps to some extent with general intelligence. Thus, the EI has increasingly important implication for society. Proponents of EI claim that individuals can enjoy happier and more fulfilled lives if they are aware of both their own emotions and those of other people and able to regulate those emotions effectively.The present study is an attempt to summarize the importance of Emotional intelligence. It also discusses the three major models of emotional intelligence and the concept of emotional intelligence.

Keywords: Emotional Intelligence (EI), Emotional Intelligence model, Emotions, Intelligence Quotient (IQ)

Introduction:

Emotional Intelligence (EQ or EI) is the ability to perceive, control, and evaluate emotions. It also helps a person communicate effectively, empathize with others, overcome obstacles, and resolve conflicts. Emotional Intelligence affects a person's performance, physical health, and mental health. Emotional intelligence is the something‖ in each of us that is a bit intangible. It affects how we manage behavior, navigate social complexities, and make personal decisions that achieve positive results. Emotional intelligence is made up of four core skills that pair up under two primary competencies: personal competence and social competence. Emotional intelligence is commonly defined by four attributes:

Personal competence is made up of our self-awareness and self- management skills, which focus more on you individually than on our interactions with other people. Personal competence is our ability to stay aware of our emotions and manage our behavior and tendencies. Self- Awareness is our ability to accurately perceive our emotions and stay aware of them as they happen. Self-Management is our ability to use awareness of our emotions to stay flexible and positively direct our behavior.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- **Significance of Emotional Intelligence**

As we know, it‘s not the smartest people that are the most successful or the most fulfilled in life. You probably know people who are academically brilliant and yet are socially inept and unsuccessful at work or in their personal relationships. Intellectual ability or our intelligence quotient (IQ) isn‘t enough on its own to be successful in life. Yes, our IQ can help you get into college, but it‘s our EQ that will help you manage the stress and emotions when facing our final exams. IQ and EQ exist in tandem and are most effective when they build off one another.

- **Emotional intelligence and Its Effects**

Our performance at school or work: A high emotional intelligence can help you navigate the social complexities of the workplace, lead and motivate others, and excel in our career. In fact, when it comes to gauging important job candidates, many companies now view emotional intelligence as being as important as technical ability and use EQ testing before hiring.

Our physical health: If you're unable to manage our emotions, you probably are not managing our stress either. This can lead to serious health problems. Uncontrolled stress can raise blood pressure, suppress the immune system, increase the risk of heart attack and stroke, contribute to infertility, and speed up the aging process. The first step to improving emotional intelligence is to learn how to manage stress.

Our mental health: Uncontrolled emotions and stress can also impact our mental health, making you vulnerable to anxiety and depression. If you are unable to understand, be comfortable with, or manage our emotions, you'll also struggle to form strong relationships. This in turn can leave you feeling lonely and isolated and further exacerbate any mental health problems.

Our relationships: By understanding our emotions and how to control them, you're better able to express how you feel and understand how others are feeling. This allows you to communicate more effectively and forge stronger relationships, both at work and in our personal life.

- **Emotional intelligence can be Uplift**

A high IQ is also something we tend to be born with while emotional intelligence is something we can work to improve. To a large degree, our emotional intelligence starts in childhood with how we‘re raised, but as adults, we can take steps to get emotionally ―smarter.‖ Justin Bariso, author of EQ, Applied: A Real-World Approach to Emotional Intelligence, offers seven ways to improve emotional intelligence in an article written for Inc: Reflect on our emotions. This is where self-awareness begins. To grow in emotional intelligence, think about our own emotions and how you typically react to negative situations, whether they involve a co-worker, family member or stranger. When you‘re more aware of our emotions and typical reactions, you can start to control them.

Ask for perspective. What we perceive to be reality is often quite different from what those around us are seeing. Observe. Once you‘ve increased our self-awareness and you understand how you‘re coming across, pay more attention to our emotions. Pause for a moment. Stop and think before you act or speak. It‘s hard to do, but keep working at it and it will become habit. Become more empathetic by understanding the Try to understand the behind another person‘s feelings or emotions.

Choose to learn from criticism. Who likes criticism? Possibly no one. But it‘s inevitable. When we choose to learn from criticism rather than simply defend our behaviors, we can grow in emotional intelligence practice. Becoming more emotionally intelligent won‘t happen overnight, but it can happen with effort, patience, and a lot of practice.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- **Emotional Intelligence models**

The Emotional Intelligence models developed in the twentieth century relied predominantly on the correlation method. EI researchers have developed four major models they are ability, mixed, bar-on model and trait EI models. The main difference in these four categories is whether author‘s models perceive their EI as an innate human trait or a competence that can be systematically developed over time. Thus, measuring EI differs per model varying from strict ability testing with right and wrong answers to subjective self-report types of measurement. Ability models regard emotional intelligence as a pure form of mental ability and thus as a pure intelligence. In contrast, mixed models of emotional intelligence combine mental ability with personality characteristics such as optimism and wellbeing.

Bar-On model based within the context of personality theory, emphasizing the co-dependence of the ability aspects of emotional intelligence with personality traits and their application to personal well- being. While, trait models of EI refers to an individual self-perceptions of their emotional abilities. The ability model of emotional intelligence is proposed by John Mayer and Peter Salovey. The mixed model of emotional intelligence is proposed by Daniel Goleman. The bar-on model of emotional intelligence is proposed by Revenue bar-on. The Trait model of emotional intelligence is proposed by K.V. Petrides.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- **The Ability Model of EI**

The Ability model of EI was first constructed by Salovey and Mayer (1990) and begins with the idea that emotions contain information about relationships and whether these relationships are actual, remembered, or imagined, they coexist with emotions - the felt signals of the relationship‘s status. Salovey & Mayer‘s four branch Ability model of EI facilitates an ability to recognise the meanings of emotions and their relationships, and employ them to enhance cognitive activities The Ability model divides EI into four branches: perceiving emotions, using emotions to facilitate thought, understanding emotions, and managing emotions in a manner that enhances personal growth and social relations

Perceiving Emotion:

This is an ability to identify emotions in oneself, in others, express them accurately and further discriminate between honest and dishonest expressions of feelings.

This sharpens the thought process as emotions direct attention towards important information and the emotions can be used to classify the information for better judgment and memory. Emotionality helps people to have multiple perspectives. A happy mood leads to optimistic views

and a bad mood to pessimistic thoughts. An awareness of these mood swings assists a person in approaching a problem in specific ways with better reasoning and creativity.

Understanding Emotions

It is based on employing emotional knowledge: to identify the subtle relationships and differences between similar emotions – eg. Loving and liking, and also interpret the meanings of those emotions. The person also has the ability to identify complex emotions occurring simultaneously (love and hate, fear and surprise, etc.) and also perceive the transition from one emotion to another (when anger turns to satisfaction or anger leading to shame).

Managing Emotions:

It is an ability to be open to emotions good or bad and thus having the power to voluntarily attach or detach from an emotion. The person also has the competence to reflect on his own and other‘s emotions and thus be able to manage emotions in himself and others. The ability to perceive emotion, integrate emotion to facilitate thought, understand emotions and to regulate emotions to promote personal growth.

- **Emotional intelligence can be developed**

The communication between our emotional and rational brains is the physical source of emotional intelligence. The pathway for emotional intelligence starts in the brain, at the spinal cord. Our primary senses enter here and must travel to the front of our brain before you can think rationally about our experience. However, first they travel through the limbic system, the place where emotions are generated. So, we have an emotional reaction to events before our rational mind is able to engage. Emotional intelligence requires effective communication between the rational and emotional centers of the brain.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

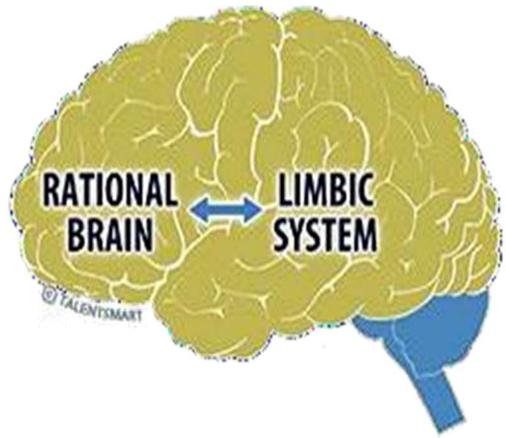

Emotional intelligence is a balance between the rational and emotional brain.

Different between IQ and EQ:

If emotional intelligence is a type of intelligence, how does it differ from the mental type? In part, by how it‘s measured. One‘s intelligence quotient (IQ) is a score derived from standardized tests designed to measure intelligence. Our IQ relates directly to our intellectual abilities, like how well you learn as well as understand and apply information. People with higher IQs can think abstractly and make mental connections more easily.Emotional intelligence is very different. Sometimes called EI (for Emotional Intelligence) or EQ (for Emotional Intelligence Quotient), emotional intelligence is like using emotions to think and enhance our reasoning. Those with high emotional intelligence are able to manage their emotions as well as use their emotions to facilitate their thinking and understand the emotions of others. When it comes to the workplace, some say emotional intelligence is more beneficial for our career than IQ, although others argue IQ matters more. Regardless of which is more important, emotional intelligence plays a decidedly important role at work.

Conclusion:

Emotional Intelligence play an important role for all of people in society. EI should be improved in all areas that means families, schools, colleges, working place etc. This paper has made a better understanding about the various attributes of emotions and better control over the emotion. Handling emotions is an important requirement for all levels of people. Emotional Intelligence will bring adaptability, empathy towards employee, leadership qualities, group rapport, participative management, decision making and understanding among people.

Refernce:

1. Goleman, D. (2006). Social Intelligence: The New Science of Human Relationships. New York: Bantam Books.

2. Mayer, J. D. Caruso, D.R. & Salovey, P. (1999). Emotional intelligence meets traditional standards for an intelligence.

3. Mayer, J.D. Caruso, D.R., &Salovey,P. (1999). Emotional intelligence meets traditional standards for an intelligence.

4. Goleman, D. (1995). Emotional Intelligence: Why it can matter more than IQ. New York: Bantam Books.

5. Bar-On, R. 2006: The Bar-On model of Emotional-Social Intelligence (ESI), Psicothema, 18(sup), pp. 13.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"कन्या भ्रूण हत्या" समाजशास्त्रीय अध्ययन

मंजू गुर्जर

शोधार्थिनी, विषय समाजशास्त्र

जीवाजी विश्वविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. ममता दुबे

प्राध्यापक- वीरांगना झलकारी बाई

शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15121830

IMPACT FACTOR

5.924

प्रस्तावना

भारतीय समाज में कन्या भ्रूण हत्या को एक अभिशाप माना जाता है। इसके पीछे कई सामाजिक कुरितियाँ एवं भ्रान्तियां जिम्मेदार है हमारा भारतीय समाज एक पुरूष प्रधान समाज है और यहाँ किसी लड़की को पालना पोषना उसकी अस्मिता की रक्षा करना कुछ मुश्किल भरा होता है। यही नहीं हमारे समाज में दहेज की परम्परा ने इतना विकराल रूप ले लिया है। कि लोग कन्या जन्म होने पर ही घबरा जाते हैं वर्तमान समय में कन्या भ्रूण हत्या एक ज्वलंत सामाजिक अपराध एवं समस्या के रूप में प्रत्येक समाज के सम्मुख एक चुनौती के रूप में खड़ी हुई है। जैसा कि हम जानते है कि समाज के दो विभिन्न अंग नर और नारी हैं इन दोनों के बगैर समाज अपूर्ण है क्योंकि स्त्री एवं पुरूष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जीवन एवं समाज की कल्पना इन दोनों के बिना अधूरी है। कहा जाता है कि सृष्टि के रचियता दो है। प्रथम ब्रम्हा जी तथा द्वितीय जन्म देने वाली माँ कहावत है कि "जननी जन्म भूमिश्वर स्वगदिय गरीयसी" अर्थात जन्म देने वाली माँ और जन्म भूमि का स्थान स्वर्ग से भी बढ़कर होता है तो फिर कैसे कन्या को लक्ष्मी एवं जननी की उपमा देने वाली भारतीय संस्कृति इतनी क्रूर एवं अमानवीय हो गई कि उसके अस्तित्व पर काले घने बादल मंडराने लगे है । यद्यपि किसी भी देश की आधी जनसंख्या स्त्रियाँ हैं । तो फिर क्यों हमारे यहाँ स्त्री - पुरूष के अनुपात में इतनी तेजी से गिरावट आ रहा है। अर्थात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या तेजी से क्यों घट रही है। इसका एक बहुत बड़ा कारण कन्या भ्रूण हत्या है। अर्थात् माँ की कोख में को नष्ट करने के पाप को कन्या भ्रूण हत्या कहा जाता है ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्त्री भ्रूण

तालिका क्रमांक- 1

विभिन्न राज्यों में शिशु लिंगानुपात 900 से कम (2001-2011)

स.क्र.	राजय	शिशु लिंगानुपात (0–6) वर्ष	
		2001	2011
1	जम्मू कश्मीर	941	862
2	हिमाचल प्रदेश	896	909
3	पंजाब	798	846
4	चण्डीगढ़	845	880
5	उत्तराखण्ड	908	890
6	हरियाणा	819	834
7	दिल्ली	868	871
8	राजस्थान	909	888
9	गुजरात	883	809
10	महाराष्ट्र	913	894
11	मध्यप्रदेश	932	918

कन्या भ्रूण हत्या के कारण :-

1. **भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक सोच कन्या भ्रूण हत्या के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है। समाज में आज भी बेटे को बुढ़ापे का सहारा माना जाता है और बेटी को पराया धन धार्मिक और सामाजिक कार्यकलापो के अनुसार बेटे को ही माता-पिता के अंतिम संस्कार व पिण्डदान का अधिकारी माना जाता है ।**

2. **भारतीय समाज में कन्या भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण दहेज भी है ।**
3. **चिकित्सको का नैतिक पतन आदि भी कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा देते है ।**
4. **4. सोनोग्राफी द्वारा भ्रूण हत्या की जाँच की आसान उपलब्धता सरल व सुलभ पहुंच एवं गर्भपात की आसान प्रक्रिया कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा देती है।**
5. **यह सामाजिक मान्यता की पुत्र जन्म महिला के सामाजिक स्तर में उत्थान का कारक होता है।**

तालिका क्रमांक - 2

गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन सा कारण उत्तरदायी है?

स.क्र.	गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन उत्तरदायी है।	संख्या	प्रतिशत
a	कम आय	19	0.38
b	छोटे परिवार की धारणा	26	5.2
c	पुत्र मोह	110	22.00
d	पुत्रियाँ पराया धन हैं	28	5.6
e	असुरक्षा की भावना	106	21.2
f	दहेज	176	35.2
g	पता नहीं	35	7.00
	योग	500	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 500 **महिला उत्तरादाताओं में से** 3.8 **प्रतिशत महिलाओ ने कहा कि गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कम आय उत्तरादायी है,** 5.2 **प्रतिशत ने कहा कि छोटे परिवार की धारणा उत्तरदायी है,** 22.00 **प्रतिशत ने कहा कि पुत्र मोह उत्तरदायी है,** 5.6 **प्रतिशत ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए पुत्रियाँ पराया धन होती है का विचार उत्तरादायी है,** 21.2

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि असुरक्षा की भावना उत्तरदायी है, 35.2 **प्रतिशत ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए दहेज उत्तरदायी है,** 7.00 **प्रतिशत ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए क्या उत्तरदायी है पता नहीं।**

तालिका क्रमांक–3

गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन अधिक जिम्मेदार है?

स.क्र.	गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए कौन अधिक जिम्मेदार है।	संख्या	प्रतिशत
a	महिलाये	28	5.6
b	पुरूष	120	24.00
c	दोनों समान रूप से	273	54.6
d	पता नहीं	79	15.8
	योग	500	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 500 **महिला उत्तरदाताओं में से** 5.6 **प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या के लिए महिलाऐ अधिक जिम्मेदार है,** 24.00 **प्रतिशत महिला ने कहा कि पुरुष अधिक जिम्मेदार है,** 54.6 **प्रतिशत ने कहा कि महिला व पुरूष दोनों समान रूप से जिम्मेदार है,** 15.8 **प्रतिशत ने कहा कि पता नहीं कौन जिम्मेदार है ।**

तालिका क्रमांक–4

गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या किस स्थिति में अधिक होती है?

स.क्र.	गुर्जर समाज में कन्या भ्रूण हत्या किस स्थिति में अधिक होती है।	संख्या	प्रतिशत
a	प्रथम संतान पुत्री हो जाने के बाद	211	42.2
b	प्रथम संतान पुत्र हो जाने के बाद	122	24.4
c	पता नहीं	167	33.4
	योग	500	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 500 महिला उत्तरदाताओं में से 42.2 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि प्रथम संतान पुत्री हो जाने के बाद कन्या भ्रूण हत्या अधिक होती है, 24.4 प्रतिशत ने कहा प्रथम संतान पुत्र हो जाने के बाद कन्या भ्रूण हत्या अधिक होती है जबकि 33.4 प्रतिशत ने कहा कि पता नहीं ।

कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उपाय ओर सरकार की पहलः-

सरकार ने देश में कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए बहु आयामी रणनिति अपनाई है। इसमें जागरूकता पैदा करने और सुग्योजित उपाय पैदा करने के साथ-साथ महिलाओं को सामाकि आर्थिक रूप से अधिकार सम्पन्न बनाने के कार्यक्रम शामिल हैं जिनमें मुख्य उपाय निम्न है-

1. गर्भधारण करने से पहले और बाद में लिंग चयन रोकने और प्रसव पूर्व निदान तकनिकि को नियमित करने के लिए सरकार ने एक कानून गर्भधारण से पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनिकी कानून 1994 में लागू किया। इसमें 2003 में संशोधन किया गया ।

2. सरकार इस कानून को प्रभावकारी तरीके से लागू करने में तेजी लाई उसमें विभिन्न नियमों में संशोधन किए जिसमें गैर पंजीकृत मशीनों को सील करने में और उन्हें जप्त करने तथा गैर पंजीकृत क्लीनिको को दंडित करने के नियम एवं प्रावधान शामिल है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री ने सभी राज्य सरकारों से आग्रह किया कि वे अधिनियम को मजबूती से कार्यान्वित करें और गैर कानूनी तरीके सेलिंग का पता लगाने के तरीके रोकने के लिए कदम उठाएँ ।

4. 5माननीय प्रधानमंत्री जी ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को आग्रह किया कि वे लिंग अनुपात की प्रवृति को पलट दे तथा शिक्षा और अधिकारिता पर जोर देकर बालिकाओं की अनदेखी की प्रवृति पर रोक लगाएँ ।

5. वेबसाइट पर लिंग चयन विज्ञापन रोकने के लिए यह मामला संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय के समक्ष उठाया गया।

6. पी.एन.डी.टी कानून के अन्तर्गत केन्द्रीय निगरानी बोर्ड का गठन किया गया और इसकी नियमित बैठके कराई जा रही है।

कन्या भ्रूण हत्या के प्रभाव :-

1. कम लिंगानुपात जनगणना 2011 के अनुसार 1000 लड़को पर 914 लड़कियाँ ।
2. महिला / महिला तस्करी गरीब युवतियाँ इस अवैध प्रथा का शिकार होती है ।
3. बलात्कार और मारपीट के मामलों में वृद्धि |
4. जनसंख्या में गिरावट / कम माताओं और कम गर्भ के कारण यहाँ कम जन्म होते है।

निष्कर्ष:-

स्पष्ट होता है कि विश्व भारत का सबसे कम लिंगानुपात अर्थात् प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या सन् 2001 में 933 एवं सन 2011 में 940 है। भारत में गिरते लिंगानुपात का प्रमुख कारण कन्या भ्रूण हत्या है इस लिंगानुपात का प्रमुख कारण कन्या भ्रूण हत्या है। कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सर्वप्रथम प्राचीन काल से समाज में व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा तथा पुत्र व पुत्री के बीच भेदभाव पूर्णव्यवहार की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा । "बेटी को अधिकार दो बेटे जैसा प्यार दो' जैसे विचारों को अपने व्यवहार में लाना होगा सरकार के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए कठोर से कठौर कानून बनाये जाने चाहिए और कानूनों का पालन न करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही व कठोर दण्ड की व्यवस्था की जानी चाहिए। एन.सी. ओ. सामाजिक कार्यकर्ताओं बुद्धिजीवियों के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या को रोकने तथा जनता को जागरूक करने के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए दहेज अधिक उत्तरादायी है । क्योंकि हमारे समाज में दहेज का लेन-देन लाखों करोड़ो में होता है ।

संदर्भ:-

1. **आधुनिक समाज में कन्या भ्रूण हत्या : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ० हरिचरण मीणा पृष्ठ संख्या** 1

2. **कन्या भ्रूण हत्या एक अभिषाप कु० नीरज आर्या, प्रो. राजेश्वरी पंत पृष्ठ संख्या-**87

3. **सिंह महेन्द्र प्रसाद, लोक प्रशासन इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली,** 2015 **पृष्ठ संख्या -** 465

4. **महावीर, डॉ. सुनील पृष्ठ संख्या-**172

5. **भारत में कन्या भ्रूण हत्या एक सामाजिक अभिशाप - डॉ. वसुधरा गोयल प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय जौरा जिला मुरैना (म. प्र.) पृष्ठ संख्या -** 14-15

6. **राष्ट्रीय कैडेट कोर - महेन्द्र नाथ श्रीवास्तव पब्लिकेशन -** SBPD Publication, **पृष्ठ संख्या-**115

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ECOLOGICAL STUDY OF GLYCINE MAX (L) AT GAYA DISTRICT, BIHAR

SONI LATA KUMARI[1]

PG Deapartment of Environmental Science,MU, BODHGAYA

MANOJ KUMAR[1]

PG Deapartment of Botany,MU, BODHGAYA

V.K. PRABHAT[2]

PG Deapartment of Botany,Ram Yas PG College Malak,Balau,PRAYAGRAJ

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15121495

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

The present paper deals with Ecological experimenatal study of Glycine max (L) at Gaya District ,Bihar. The experiment was laid out in split-plot design having five nutrient levels in main plot and four in weed management practices in subplot. This experiment was done in departmental experimenatal plot at M U Botany. Application of 50% RDF along with 2.5 t FYM/ha andVermicompost1.25 t/ha recorded significantly higher plant height (54.60 cm), dry weight/plant (18.60 g), No. of leaves/plant (35.70), leaf area index at 60 DAS (5.36), No. of root nodules/plant at 30 DAS (20.46) and 60 DAS (61.31), No. of pods/plant (23.50), No. of grain/pod (2.52), grain yield (16.94 q/ha) and straw yield (28.64 q/ha) over rest of the treatments but was statistically at par with 50% RDF + 5 t FYM/ha. In weed management practices, hand weeding twice at 25 and 45 DAS recorded significantly higher plant height (55.47), dry weight/plant (18.40 g), No. of leaves/plant (35.10),leaf area index at 60 DAS (5.22), No. of root nodules/plant at 30 DAS (20.14) and 60 DAS (60.30), No. of pods/plant (22.52), No. of grain/pod (2.42), 100-grain weight (9.50 g), grain yield (16.71 q/ha) and straw yield (28.11 q/ha) over control but was at parwithPendimethalin1.0kg/ha(Pre-emergence)+onehandweedingat40DASand Pendimethalin 1.0 kg/ha (Pre-emergence) + imazethapyr 55 g/ha (Post-emergence) at 25 DAS.

Kew words : FYM, Nodule, Glycine, Weed, and Vermi compost

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Introduction:

The **soybean**, **soy bean**, or **soya bean** (***Glycine max***) is a species of legume native to East Asia, widely grown for its edible bean, which has numerous uses.Traditional unfermented food uses of soybeans include soy milk, from which tofu and tofu skin are made. Fermented soy foods include soy sauce, fermented bean paste, nattō, and tempeh. Fat-free (defatted) soybean meal is a significant and cheap source of protein for animal feeds and many packaged meals For example, soybean products, such as textured vegetable protein (TVP), are ingredients in many meat and dairy substitutes Soybeans contain significant amounts of phytic acid, dietary minerals and B vitamins. Soy vegetable oil, used in food and industrial applications, is another product of processing the soybean crop. Soybean is a common protein source in feed for farm animals that in turn yield animal protein for human consumption

Glycine max(L.) is popular as golden bean has become the miracle crop of 21st century. It serves the dual purpose for being grown both as an oilseed and pulse crop as well (Thakare *et al.,* 2006). It has been termed as miracle bean because of higher protein (40%) and oil (20%) content (Chouhan and Joshi,2005).It is an excellent source of important constraints of soybean productivity in the North Indian plains (Tiwari, 2001). Hence, a balanced nutrients application is must to harness the productivity of the crops. Moreover, continuous imbalanced use of fertilizers has also deteriorated soil health. Therefore, the situation warrants adoption of integrated nutrient management systems. The long-term use of inorganic fertilizers without organic supplements damages the soil physical, chemical and biological properties and causes environmental pollution. Organic manures are good complimentary sources of nutrients and improve the efficiency of the applied mineral nutrients on one hand and improve physical and biological properties of soil on the other hand (Chaudhary *et al.,* 2004). Therefore, any nutrient-management practice that can improve organic matter status of soil is important. Ajudicious and combined use of organic and inorganic sources of plant nutrients is essential to maintain soil health and to augment the efficiency of nutrients. Additionally, such integration of organic and inorganic nutrients plays an important role in economizing the use of fertilizers under increasing cost, which is restricting their useto an optimum level. Weed in festation in soybean is one of the main constraints which limit sthecrop yield . A yield reduction of 20 to 77 per cent was reported in soybean due to weed competition (Kurchania *et al.,* 2001). Weeds compete with crop plants for moisture, light, nutrients and space. Weed grows much faster compared with soybean crop and thus smothers the crop. The research evidence suggests that soybean crop should be provided weed free condition from 15-30 DAS. Weed deprives greater amounts of applied as well as native nutrient of the crops.

Integrated weed management is an integration of effective and workable weed management practices that can be used ecologically and economically by the farmers. Therefore, integrated approach of chemical and cultural control may be more feasible and practicable (Sharma *et al.,* 2009). This can partially be overcome by various nutrient management practices involving combination of inorganic and organic fertilizer and management of weed through integrated approach. They play an important role in enhancing the productivity and improving the soil physical, chemical and biological properties. No systematic work has been carried out on these aspects on soybean in Bihar, therefore, present experiment was planned to evaluate the effect of both with different levels on growth and yield of soybean.

Material and Methods

A field experiment was conducted during *kharif* season of 2023 at the experimental department of botany at M U Bodh Gaya . The soil of the experimental plot was alluvial in nature, having pH 8.3, low in organic carbon (0.41%), available nitrogen, phosphorous and potassium. The experiment was carried out in split-plot design. Nutrient levels having five levels, viz. Control, RDF- N:P_2O_5:K_2O(30:60:40Kg/ha),50%RDF+ FYM 5.0 t/ha, 50% RDF + VC 2.5 t/ha and 50%RDF+FYM2.5t/ha+VC1.25t/hain main plot and four weed management in viz. Control, Hand weeding at 25 and 45 DAS, Pendi methalin 1.0 kg/ha (Pre-emergence) + one hand weeding at 40 DAS and Pendimethalin 1.0 kg/ha (Pre-emergence) + imazethapyr 55 g/ha (Post-emergence) at 25 DAS in sub-plot and replicated thrice.

The soybean variety, JS-335 was sown on 03 July, 2023 in row 30 cm apart using seed rate of 75 kg/ha. Full dose of nutrients sources applied as basal prior to sowing in band. Pendi methalin was applied next day of sowing and Imazethapyr was applied at 25 DAS. The spraying was done with flat fan nozzle. Hand weeding was done with the help of *khurpi and fabda* at 25, 40 and 45 days after sowing as per treatment.

Five plants from second row of each plot were randomly selected from each treatment for recording observation on growth parameter. The economics of different treatments were computed by considering the prevailing market price of inputs and produce of Glcine .

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Results and Discussion

Growth parameters Application of 50% RDF + FYM 2.5 t/ha + VC 1.25 t/ha resulted significantly taller plants. However, the plant height in the plots treated with 50% RDF + FYM 5.0 t/ha was similar. The effect of organic and inorganic fertilizer in combination was more pronounced with the advancement of crop growth, indicating better effect on plant height of Glycine. This might be due to continuous availability of nutrients to soybean plants because of their slow release of nutrients from FYM during the crop season.

Fig; Seeds Germinating Plants Fruiting
and Flowering Plan

Higher leaf-area index (LAI) and dry matter accumulation was recorded with 50% RDF + FYM2.5t/ha+VC1.25t/hafollowedby50% RDF+FYM5.0t/ha,50%RDF+VC2.5t/ha and RDF alone. The control plots recorded significantly lower leaf-area index (Table 1). The LAI is a resultant of leafy growth of the plant. In the present study, increase in leaf area index was due to favorable synthesis of growth favoring constituents in plant system due to better nutrition of the plants owing to FYM and vermin compost application might have resulted in improvement in leaf size, which might have led to significant improvement in LAI with different levels of FYM and vermin compost with inorganic fertilizers. The photosynthetic activities of the plants are well reflected in their dry matter accumulation. An increased production of dry matter indicates the better utilization of nutrients along with better harvest of solar energy. In present investigation, the slow release of nutrients associated with vermin compost might have resulted in higher concentration of nutrients in plant cells result in gin higher dry-matter accumulation. In association with soil microorganisms, organic manures are known to help in synthesis of certain phyto hormones and vitamins which promote the growth and development of crops. The leaves of the plant are normally its main organs of photosynthesis. So higher leaf area- index coupled

with vigorous vegetative growth at higher fertility levels might be responsible for higher dry-matter production. Pendi methalin 1.0 kg/ha (Pre-emergence) + imazethapyr 55 g/ha (Post-emergence) at 25 DAS and Pendimethalin 1.0 kg/ha (Pre- emergence) + one hand weeding at 40 DAS increased all the growth parameters in initial stage at 30 DAS. But at later crop growing stage hand weeding at 25 and 45 DAS and Pendimethalin 1.0 kg/ha (Pre-emergence) + one hand weeding at 40 DAS was highly effective and promoting all growth factor. Increase in plant dry matter accumulation may be attributed to better utilization of growth factors and higher photosynthetic efficiency resulting in increased plant height, number of leaves and more leaf area which contributed towards increased dry matter yield.

Yield attributes Significantly higher number of pods/plant and grains/pod were recorded with integrated application of 50%RDF+FYM 2.5t/ha +VC1.25 t/ha than the rest of the treatments butwas at par with 50% RDF + FYM 5.0 t/ha (Table 2). Since the plants were healthy under the treatment having combination of inorganic fertilizer, FYM and vermin compost and produced more dry matter which was then reflected in their yield attributes. The minimum number of pods/plant and grains/pod were recorded in the control plots. Nutrient management did not influence the 100-seed weight significantly, being a varietal character, is less sensitive to management levels. Similar result was also reported by (Rana and Badiyala 2014). However, higher seed index was obtained with combined application of 50%RDF+FYM 2.5t/ha +VC -1.25 t/ha and minimum seed index was associated with control, but the differences were non-significant. Vermi compost application delayed leaf senescence and this might be the reason for increased seed weight (Devi *et al.,* 2013).

CONCLUSION;

1.In weed management practices, hand weeding twice at 25 and 45 DAS recorded significantly higher plant height (55.47), dry weight/plant (18.40 g), No. of leaves/plant (35.10),leaf area index at 60 DAS (5.22), No. of root nodules/plant at 30 DAS (20.14) and 60 DAS (60.30),

2. No. of pods/plant (22.52), No. of grain/pod (2.42), 100-grain weight (9.50 g), grain yield (16.71 q/ha) and straw yield (28.11 q/ha) over control.

3. It was at parwithPendimethalin1.0kg/ha(Pre-emergence)+onehandweedingat40DASand Pendimethalin 1.0 kg/ha (Pre-emergence) + imazethapyr 55 g/ha (Post-emergence) at 25 DAS.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

REFERENCES

1. Chaturvedi, S., Chandel, A.S., Dhyani, V.C. and Singh, A.P. (2010). Productivity, profitability and quality of soybean [Glycinemax(L.)Merrill]andresidual soil fertility as influenced by integrated nutrient management. *Indian Journal of Agronomy* 55 (2): 133-137.
2. Chaudhary,D.R.,Bhandary,S.C.andShukla,L.M. (2004). Role of vermicompost in sustainable agriculture: A review. *Agricultural Review* 25 (1): 29-39.
3. Chauhan, G.S. and Joshi O.P. (2005).Soybean [*Glycine max* (L.) Merrill]: 21st century crop. *Indian Journal of Agriculture Science* 75 (8): 461-469.
4. Devi, K.N., Singh, T.B., Athokpam, S.H., Singh, N.B. and Shamurailatpam, D. (2013). Influence of inorganic, biological and organic manures on nodulation and yield of soybean [*Glycine max* (L.) Merrill] and soil properties. *Australian Journal of Crop Science* 7 (9): 1407-1415.
5. Kurchania, S. P., Rathi, G. S., Bhalla, S. and Mathew, R., (2001). Bio–efficacy of post-emergence herbicides for weed control in soybean. *Indian Journal of Weed Science* 33(1&2): 34 -37.
6. Maheshbabu, H.M., Hunje, R., Patil, N.K.B and Babalad, H.B. (2008). Effect of organic manures on plant growth, seed yieldandqualityofsoybean. *Karnataka JournalofAgricultureScience*21(2):219-221.
7. Rana, R. and Badiyala, D. (2014). Effect of integrated nutrient management on seed yield, quality and nutrient uptake of soybean [*Glycine max* (L.) Merrill] under mid hill conditions of Himachal Pradesh. *Indian Journal of Agronomy*59 (4): 641-645.
8. Sandil, M.K., Sharma, J.K., Sanodiya, P. and Pandey, A. (2015). Bio-efficacy ontank-mixed propaquizafop and imazethapyr against weeds in soybean. *Indian Journal of Weed Science* 47 (2): 158-162.
9. Singh, R and Rai, R.K. (2004). Yield attributes, yield and quality of soybean [Glycine max (L.) Merrill] influencedby integrated nutrient management. *IndianJournalofAgronomy*49(4):271-274.
10. Thakare, K.G., Chore, C.N., Deotale, R.D., Kamble,P.S.,Sujata,B.P.andShradha, R.L. (2006). Influence of nutrients and hormones on biochemical and yield and yield contributing parameters of soybean.*JournalofSoilandCrop*16 (1):210-216.

11. Tiwari, S.P. (2001). Shattering the production constraints in soybean based cropping systems. *J.N.K.V.V. Research Journal* 35 (182): 1-10.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

The Influence of Workplace Stress on Employee Engagement in Private Sector Organizations

Ms SAPNA YADAV[1]

Ph.D. Scholar,Jiwaji University, Gwalior (M.P.)

Dr. SWARNA PARMAR[2]

[2]Head, School of Studies in Management
Jiwaji University, Gwalior (M.P.)

Dr. P.V. RAO[3]

[3]Professor, M.L.B. Arts & Commerce College, Gwalior (M.P.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15149902

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

Workplace stress continues to be a significant challenge for private sector organizations, impacting both employee well-being and organizational productivity. This study examines the relationship between workplace stress and employee engagement, focusing on how stressors influence the emotional and behavioral commitment of employees. A mixed-methods approach was employed, incorporating surveys and interviews with employees from various private sector industries. The quantitative analysis revealed a strong negative correlation between stress and engagement, with employees experiencing higher stress levels exhibiting lower engagement scores. The qualitative data further highlighted key stressors, including excessive workload, tight deadlines, and lack of managerial support, all of which contributed to decreased engagement. The findings suggest that excessive workplace stress leads to diminished employee motivation, lower job satisfaction, higher absenteeism, and increased turnover rates. Based on these results, the study proposes several strategies to mitigate stress and improve engagement, including the development of stress management programs, enhancing managerial support, offering flexible work arrangements, and promoting work-life balance. These initiatives are essential for fostering a positive organizational culture,

reducing stress levels, and enhancing employee engagement, ultimately contributing to improved productivity and organizational performance. The study emphasizes the importance of organizational interventions in addressing workplace stress to create a healthier, more engaged workforce.

Keywords:- Workplace Stress,Employee Engagement, Private Sector, Stress Management ,Organizational Productivity

1. Introduction

Workplace stress has become a pervasive concern in modern organizations, particularly in the private sector, where high demands, tight deadlines, and performance pressures are often prevalent. As businesses strive to meet ever-increasing demands and enhance productivity, the well-being of employees frequently takes a backseat, leading to higher levels of stress. This, in turn, can significantly affect employee engagement, which is critical to organizational success. Employee engagement refers to the emotional and behavioral commitment that employees demonstrate towards their organization, which directly influences their motivation, job satisfaction, and overall performance. Research has shown that stress in the workplace is associated with various negative outcomes, including burnout, decreased job satisfaction, absenteeism, and turnover. It has been widely recognized that employees who are stressed are less likely to be engaged in their work, leading to reduced productivity and a higher likelihood of leaving the organization. However, despite the recognized impact of stress on employee outcomes, there remains a lack of comprehensive understanding of how stress specifically affects employee engagement in private sector organizations

This study seeks to address this gap by exploring the relationship between workplace stress and employee engagement. By employing a mixed-methods approach, including both quantitative

surveys and qualitative interviews, the research aims to identify key stressors in private sector organizations and understand their impact on employee engagement. Additionally, the study will propose strategies for organizations to reduce workplace stress and enhance employee engagement, fostering a healthier and more productive work environment. The findings of this research are expected to provide valuable insights for organizations seeking to improve employee well-being, reduce turnover, and enhance overall productivity by addressing workplace stress in a proactive and strategic manner.

1.1 Background

The growing concern regarding workplace stress and its implications for organizational outcomes, particularly employee engagement, has attracted significant attention in recent years. Workplace stress in private sector organizations is increasingly recognized as a critical factor that influences employee attitudes and behaviors. As organizations seek to optimize performance and foster a productive workforce, understanding the interplay between stress and engagement has become paramount. Employee engagement, characterized by enthusiasm, dedication, and involvement in one's work, is positively correlated with organizational success. However, stress undermines this engagement by causing physical and emotional fatigue, thereby reducing employees' ability to contribute fully to their roles.

1.2 Research Objective

This paper aims to investigate how workplace stress influences employee engagement within private sector organizations. Specifically, it examines the effects of various stressors on employee attitudes, including motivation, job satisfaction, and overall commitment to the organization.

1.3 Research Questions

The study is guided by the following research questions:

1. What are the primary sources of workplace stress in private sector organizations?
2. How does workplace stress impact employee engagement in these organizations?
3. What organizational strategies can mitigate the negative effects of workplace stress on employee engagement?

2. Literature Review

2.1 Conceptualizing Workplace Stress

Workplace stress is defined as the physical and psychological response to work-related demands that exceed an individual's ability to cope. Major stressors identified in the literature include role ambiguity, excessive workload, organizational change, interpersonal conflicts, and lack of control (Sonnentag, 2018). Chronic exposure to these stressors can lead to burnout, which is characterized by emotional exhaustion, depersonalization, and reduced professional efficacy (Maslach & Leiter, 2016).

2.2 Employee Engagement: Definitions and Dimensions

Employee engagement refers to the emotional investment an employee has in their work, characterized by high levels of motivation, enthusiasm, and commitment (Kahn, 1990). Engaged employees demonstrate discretionary effort, often going beyond their basic job requirements to contribute to the organization's goals. Engaged employees are also more likely to exhibit lower absenteeism and turnover (Harter, Schmidt, & Hayes, 2002).

2.3 The Relationship Between Stress and Employee Engagement

Numerous studies indicate a negative relationship between workplace stress and employee engagement. High stress levels are linked to lower levels of job satisfaction, reduced motivation, and emotional exhaustion (Bakker & Demerouti, 2007). When employees experience chronic stress, their ability to engage meaningfully with their work is compromised. In contrast, moderate levels of stress, or eustress, may enhance performance and engagement by providing employees with challenges that they feel capable of overcoming (Crum, Salovey, & Achor, 2013).

2.4 Theoretical Framework

The study is grounded in the Job Demands-Resources (JD-R) model (Bakker & Demerouti, 2007), which posits that job demands (e.g., workload, time pressure) deplete employees' energy and engagement, while job resources (e.g., support, autonomy) promote engagement and help employees cope with stress.

3. Methodology

3.1 Research Design

This study employs a mixed-methods approach to examine the influence of workplace stress on employee engagement. A quantitative survey, complemented by qualitative interviews, provides a comprehensive understanding of the relationship between stress and engagement in the private sector.

3.2 Sampling and Data Collection

The research sample includes 300 employees from five private sector organizations across diverse industries (e.g., finance, technology, retail). Participants are selected using stratified random sampling to ensure representation across various roles, seniority levels, and demographic backgrounds. Data is collected through:

- **Surveys**: A structured questionnaire measuring workplace stress (using the Perceived Stress Scale, Cohen et al., 1983) and employee engagement (using the Utrecht Work Engagement Scale, Schaufeli et al., 2006).
- **Interviews**: Semi-structured interviews with 20 HR managers to gather insights into organizational stress management practices and their impact on employee engagement.

3.3 Data Analysis

3.3.1 Quantitative Data Analysis

The quantitative data collected through the employee surveys were analyzed using several statistical methods to understand the relationship between workplace stress and employee engagement.

- **Descriptive Statistics**: To summarize the central tendency, spread, and distribution of the responses related to perceived stress levels and engagement scores.
- **Correlation Analysis**: To assess the strength and direction of the relationship between perceived stress and employee engagement.
- **Regression Modeling**: To examine whether perceived stress serves as a significant predictor of employee engagement, and the extent to which it accounts for the variability in engagement scores.

Table 1: Descriptive Statistics of Perceived Stress and Employee Engagement

Variable	Mean	Standard Deviation	Min	Max	Range
Perceived Stress (Scale: 1-5)	3.85	0.76	2	5	3
Employee Engagement (Scale: 1-7)	4.21	1.03	2	7	5

Table 1 Explanation:

- **Perceived Stress**: The average score of employees on the perceived stress scale is 3.85, indicating that overall, stress levels are moderate to high among employees in the sample. The range from 2 to 5 suggests variability in how employees experience stress.
- **Employee Engagement**: The average engagement score of 4.21 is moderately low, reflecting the negative impact of workplace stress on engagement. The range of 2 to 7 indicates that some employees are more engaged than others, but overall, engagement is lower than optimal.

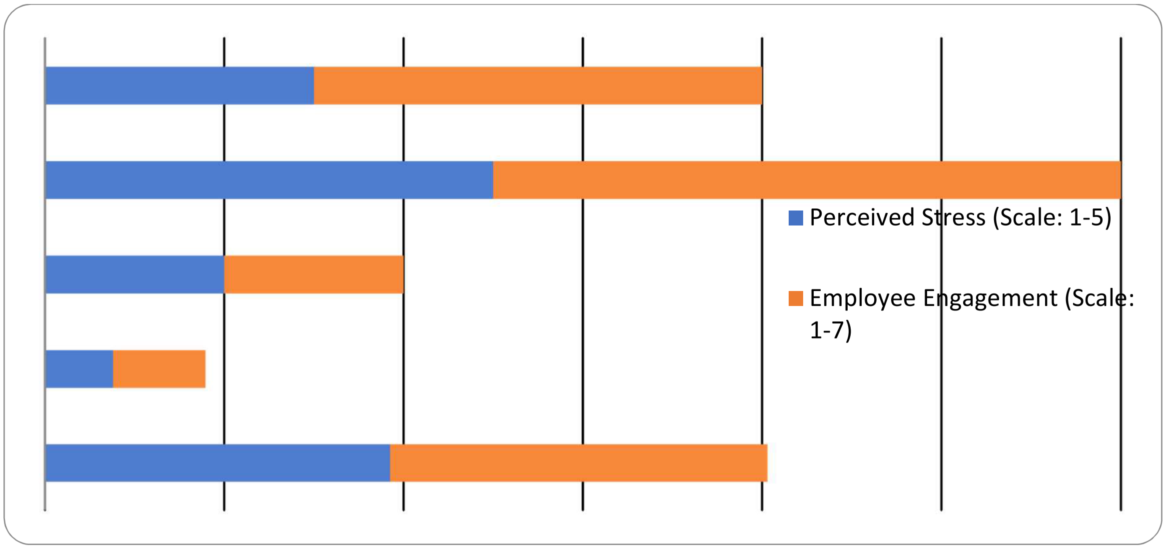

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3.3.2 Correlation Analysis

A Pearson correlation analysis was conducted to examine the relationship between workplace stress and employee engagement.

Table 2: Pearson Correlation Coefficient Between Stress and Engagement

Variable	Perceived Stress	Employee Engagement
Perceived Stress	1.00	-0.68**
Employee Engagement	-0.68**	1.00

Note: $p < 0.01$

Table 2 Explanation: The results show a strong negative correlation ($r = -0.68$, $p < 0.01$) between perceived stress and employee engagement. This suggests that higher levels of stress are associated with lower levels of engagement. The negative correlation indicates that as stress increases, engagement tends to decrease, highlighting the adverse impact of stress on employee motivation and commitment.

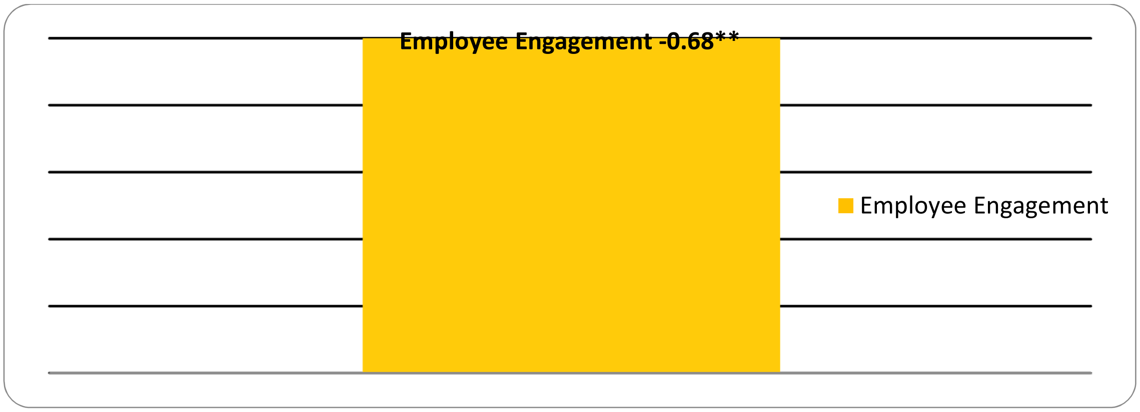

3.3.3 Regression Analysis

A linear regression model was applied to explore the extent to which perceived stress predicts employee engagement. The dependent variable is employee engagement, while the independent variable is perceived stress.

Table 3: Regression Analysis Predicting Employee Engagement

Predictor Variable	Unstandardized Coefficient (B)	Standardized Coefficient (β)	t-value	p-value
Intercept	5.23		12.45	< 0.01
Perceived Stress	-0.45	-0.68	-7.35	< 0.01

$R^2 = 0.45$, $F(1, 298) = 54.04$, $p < 0.01$

Table 3 Explanation: The regression model reveals that perceived stress is a significant predictor of employee engagement ($\beta = -0.68$, $p < 0.01$). The model explains approximately 45% of the variance in engagement scores ($R^2 = 0.45$). The negative coefficient for perceived stress indicates that as stress increases, employee engagement decreases. This reinforces the negative relationship observed in the correlation analysis.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

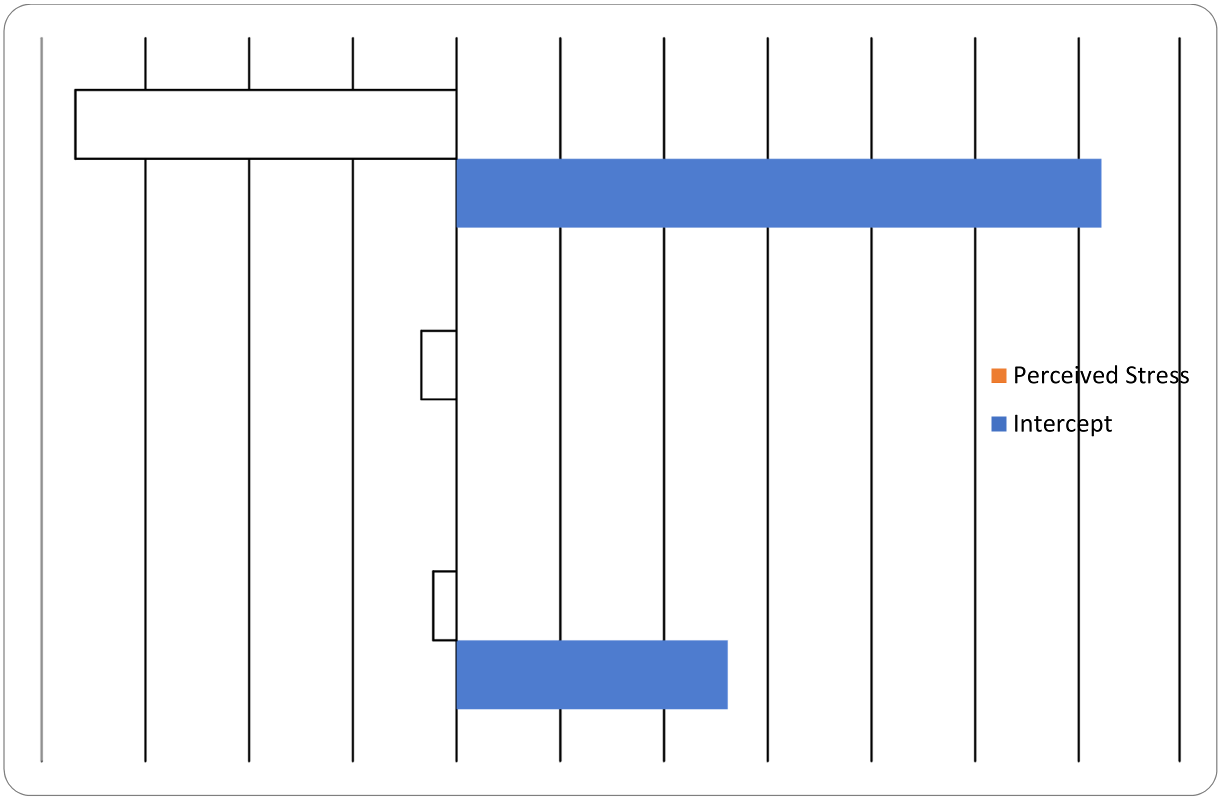

3.3.4 Qualitative Data Analysis

In addition to the quantitative data, qualitative data from interviews with HR managers were analyzed using thematic analysis. The main themes identified include:

1. **Work-Life Balance**: HR managers emphasized the need for a balanced approach to work demands and personal time. They reported that employees with greater work-life balance were generally more engaged and less stressed.

2. **Role Clarity and Support**: Clear role definitions and managerial support were cited as critical factors in reducing stress and promoting engagement.
3. **Stress Management Programs**: Managers highlighted the effectiveness of employee wellness programs, stress-relief workshops, and counseling services in mitigating stress and enhancing engagement.
4. **Organizational Culture**: A supportive and open organizational culture was mentioned as a key factor in reducing stress and improving employee morale.

4. Results

4.1 Descriptive Statistics

The survey results suggest that workplace stress levels are notably high among employees, with an average perceived stress score of 3.85 (on a 5-point scale). Factors such as excessive workload, tight deadlines, and lack of organizational support were identified as primary stressors. The engagement scores, averaging 4.21 (on a 7-point scale), were lower among employees who reported high levels of stress, indicating a significant negative impact of stress on employee engagement.

Table 4: Survey Results on Stress Factors

Stress Factor	Mean	Standard Deviation
Excessive Workload	4.10	0.85
Tight Deadlines	3.98	0.79
Lack of Managerial Support	3.72	0.92
Poor Work-Life Balance	3.95	0.88
Unclear Job Roles	3.60	1.03

Table 4 Explanation: The data in Table 4 reflect common stressors in private sector organizations. The highest stressor is **excessive workload** (mean = 4.10), followed by **tight deadlines** (mean = 3.98). The **lack of managerial support** and **poor work-life balance** are also significant contributors to stress, which aligns with the findings from the qualitative interviews.

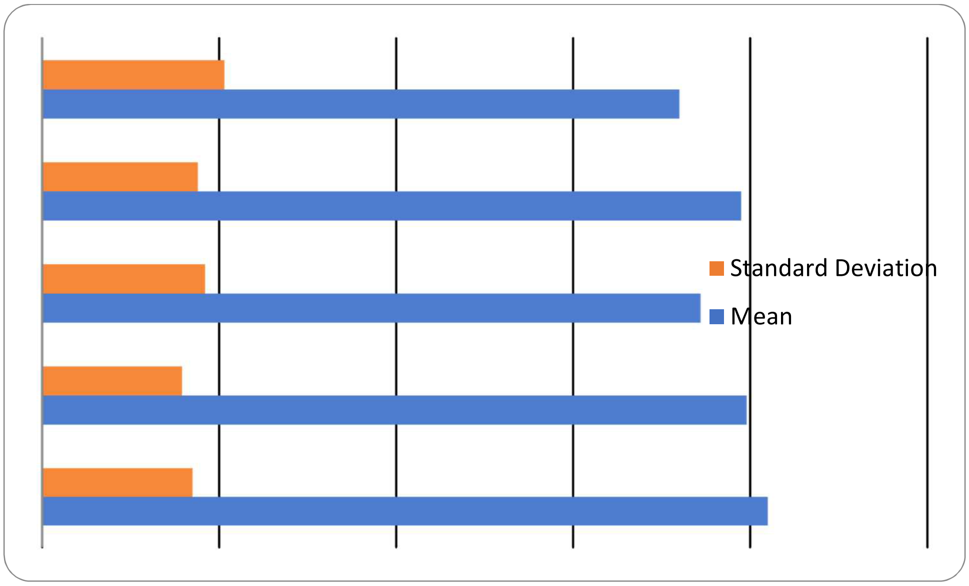

4.2 Correlation and Regression Analysis

The results from the correlation and regression analyses confirm the hypothesis that stress negatively impacts employee engagement. The strong negative correlation ($r = -0.68$, $p < 0.01$) between stress and engagement demonstrates that as perceived stress increases, employee engagement decreases. The regression model further supports this finding, explaining 45% of the variance in engagement scores ($R^2 = 0.45$). The results underscore the importance of managing stress to maintain high levels of employee engagement.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4.3 Themes from Interviews

The thematic analysis of HR manager interviews revealed key strategies for reducing stress and enhancing engagement:

- **Work-Life Balance**: Many managers noted that employees who were encouraged to maintain a healthy work-life balance tended to report higher engagement levels.
- **Clear Role Definitions and Support**: Employees who had clear expectations and received adequate managerial support were less stressed and more engaged.
- **Effective Stress Management Programs**: Organizations that invested in wellness initiatives, stress management workshops, and counseling services saw improvements in employee engagement.

5. Discussion

5.1 Interpretation of Results

The results confirm that workplace stress has a significant negative impact on employee engagement. Employees who report higher levels of stress exhibit lower levels of motivation, job satisfaction, and organizational commitment, consistent with previous research (Bakker & Demerouti, 2007). The negative correlation and regression findings suggest that addressing stress could be an effective way to enhance employee engagement, ultimately leading to improved organizational performance.

5.2 Practical Implications

Organizations should adopt a multifaceted approach to manage workplace stress and improve employee engagement. Recommended strategies include:

- **Stress Management Programs**: Offering resources such as counseling services, flexible work hours, and stress-reduction workshops.
- **Management Training**: Developing leadership skills that foster supportive work environments, clear communication, and role clarity.
- **Job Design**: Ensuring that job roles are clearly defined and employees have autonomy over their work processes.

These strategies can help reduce the negative effects of stress, improve employee morale, and boost engagement levels, leading to better organizational outcomes.

6. Conclusion

This study provides valuable insights into the significant relationship between workplace stress and employee engagement in private sector organizations. The research demonstrates that workplace stress is a critical factor influencing employee engagement, with higher levels of stress being strongly associated with lower levels of engagement. The negative impact of stress on employee attitudes and behaviors highlights the importance of addressing stress-related issues within organizations to enhance productivity, employee satisfaction, and organizational success.

6.1 Summary of Key Findings

The findings from the quantitative and qualitative analyses offer compelling evidence of the detrimental effects of stress on employee engagement:

- **High Levels of Stress**: The study revealed that employees in private sector organizations experience moderate to high levels of workplace stress, with factors such as excessive

workload, tight deadlines, and lack of managerial support being the primary contributors to stress.

- **Negative Correlation with Engagement**: Statistical analysis showed a strong negative correlation ($r = -0.68$, $p < 0.01$) between stress and employee engagement, indicating that as stress increases, employee engagement decreases. Regression analysis further confirmed that stress is a significant predictor of reduced engagement, explaining approximately 45% of the variance in engagement scores.
- **Impact on Employee Motivation and Commitment**: Employees experiencing higher stress levels were found to exhibit lower motivation, job satisfaction, and commitment to their work, consistent with previous studies on stress and engagement.
- **Qualitative Insights**: The interviews with HR managers highlighted several organizational strategies that can mitigate the negative effects of stress, such as promoting work-life balance, providing clear role definitions, offering stress management programs, and fostering supportive leadership. These strategies were found to be effective in enhancing employee engagement and reducing stress levels.

6.2 Practical Implications for Organizations

The results underscore the critical need for private sector organizations to prioritize stress management as a strategic initiative to improve employee engagement and overall organizational performance. The following practical recommendations can help organizations reduce stress and enhance engagement:

- **Develop Comprehensive Stress Management Programs**: Organizations should implement stress reduction initiatives, such as wellness programs, counseling services, and
-

- stress management workshops. These programs can equip employees with tools to cope with stress and reduce its negative impact on their well-being.
- **Foster a Supportive Work Environment**: Organizations should focus on creating a work culture that values open communication, empathy, and managerial support. Employees who feel supported by their managers are more likely to engage with their work and remain committed to their roles.
- **Promote Work-Life Balance**: Encouraging employees to maintain a healthy balance between work and personal life can help reduce stress levels. Flexible working hours, remote work options, and ensuring employees take adequate time off are strategies that can contribute to improved engagement.
- **Clarify Job Roles and Expectations**: Providing employees with clear role definitions and expectations can help reduce role ambiguity, which is a significant stressor. When employees understand their responsibilities and how their work aligns with organizational goals, they are more likely to be engaged and less stressed.

Conclusion:

In conclusion, this study reinforces the critical role that workplace stress plays in shaping employee engagement within private sector organizations. The evidence presented indicates that reducing stress through targeted organizational strategies is not only important for improving employee well-being but also essential for fostering a highly engaged, productive workforce. By addressing the root causes of stress, organizations can enhance employee satisfaction, reduce turnover, and ultimately improve organizational performance. Future research should continue to explore the complex dynamics between stress, engagement, and organizational outcomes, paving the way for the development of more effective stress management interventions in the workplace.

7. References

1. Bakker, A. B., & Demerouti, E. (2007). The Job Demands-Resources model: State of the art. *Journal of Managerial Psychology, 22*(3), 309-328.
2. Cohen, S., Kamarck, T., & Mermelstein, R. (1983). A global measure of perceived stress. *Journal of Health and Social Behavior, 24*(4), 385-396.
3. Crum, A. J., Salovey, P., & Achor, S. (2013). Rethinking stress: The role of mindsets in determining the impact of stress on health. *Personality and Social Psychology Review, 17*(4), 278-303.
4. Harter, J. K., Schmidt, F. L., & Hayes, T. L. (2002). Business-unit-level relationship between employee satisfaction, employee engagement, and business outcomes: A meta-analysis. *Journal of Applied Psychology, 87*(2), 268-279.
5. Maslach, C., & Leiter, M. P. (2016). Burnout. In C. L. Cooper & J. C. Quick (Eds.), *The handbook of stress and health: A guide to research and practice* (pp. 103-119). Wiley-Blackwell.
6. Schaufeli, W. B., Bakker, A. B., & Salanova, M. (2006). The measurement of work engagement with a short questionnaire: A cross-national study. *Educational and Psychological Measurement, 66*(4), 701-716.